RNI No. : UPHIN/2017/74695

डाक पंजीकरण सं. :
एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी. - 558/2018-2020

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 4 अंक : 03 | लखनऊ, रविवार, 6 सितम्बर 2020 से 5 अक्टूबर 2020 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

सम्पादक की कलम से ...

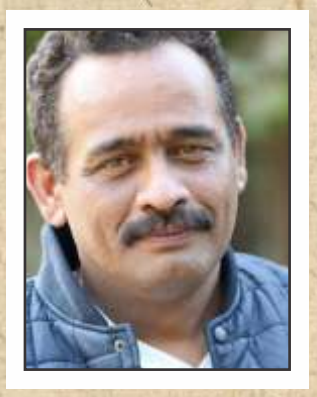

मेरे फोटोग्राफर साथियो,

साथियो स्टूडियो न्यूज के सितम्बर 2020 अंक के साथ हम आपके समक्ष है। साथियो फ़ोटोग्राफ़ी इंडस्ट्री बड़ी नाज़ुक दौर से गुज़र रही है। जब तक स्थिति सामान्य नहीं होगी तब तक ये आकलन करना मुश्किल है कि इसको उबरने में कितना समय लगेगा। संतोष करने वाली बात ये है कि बाज़ार में मूवमेंट देखने को मिल रहा है। आने वाले सीज़न की तैयारी भी होने लगी है। साथियों उम्मीद पर दुनिया क़ायम है। ऐसा लगता है कि आने वाला समय सुखद होगा। समय के साथ-साथ परिस्थिति भी बदलेगी। जब तक परिस्थिति अनुकूल नहीं हो जाती तब तक हम कुछ नया सीखने की आदत डालें। कैमरा आप सभी लोगों के पास है। आप कोशिश कीजिए कि कुछ नया किया जाए। अपने इक्विप्मेंट को ज़्यादा से ज़्यादा जानिए। जो नयी तकनीक हमारे व्यवसाय में आ रही है उसको जानने के लिए बढ़-चढ़ कर हिस्सा लीजिए। यही समय है जब आप ज़्यादा से ज़्यादा समय अपने तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने में लगाए।

समस्या का समाधान तभी हो सकता है जब आप ये ठान लें कि आप किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानेंगे।

इस अंक में फ़ोटोग्राफ़ी की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय खबरों के साथ कैमरा रिव्यू, जिससे आप आने वाले नए कैमरो के बारे में जान पाए। सिनेमा/सिनेमेटोग्राफी में कैमरा एंगल के बारे में विस्तार से बताया है। महान विभूतियों में इस बार हमने भारत की पहली महिला फोटोजर्नलिस्ट के बारे में बताया है। साथ में कोविड के समय फोटोग्राफ़ी का नया रूप एवं प्री वेडिंग फ़ोटोग्राफ़ी से सम्बंधित लेख, डीएसएलआर में ऑटोफोकस मोड्स एवं चाइल्ड फ़ोटोग्राफ़ी के बारे में नए टिप्स दिये हैं। इस बार हमने फ़ोटोग्राफ़ी में होने वाले कम्पटीशन के बारे में विस्तृत जानकारी दी है। फ़ोटोग्राफ़ी डे में अलग-अलग जिलों में हुए कार्यक्रम की फ़ोटो भी हमने इस बार दी है। आशा है इस बार का अंक भी आपके लिए ज्ञानवर्धक होगा।

आप सभी लोग अपने परिवार के साथ स्वस्थ एवं सुखी रहे ऐसी कामना है। शेष अगले अंक में।

सुरेंदर सिंह बिष्ट
सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय खबरें

ओलंपस का नया ई एम 10 IV में है सेल्फी फ्रेंडली स्क्रीन व 20एमपी सेंसर

ओलंपस लाया है अपने एंट्री लेवल ओएम-डी मिररलेस कैमरे की चौथी जेनरेशनः ई-एम10 मार्क IV, इसमें 20एमपी सेंसर व ट्रूपिक VIII प्रोसेसर है और खास बदलाव है सेल्फी लेने के संबंध में। कैमरे का फ्लिप डाउन डिस्प्ले व ऑन स्क्रीन बटन से फोटोज़ लेना और भी सुविधाजनक है।

एप्पल ने अपने 27इंची आइमैक को अपग्रेड कि 10 जेन इंटेल सीपीयू, नए एएमडी जीपीयू के साथ व दुगनी रैम क्षमता

सीपीयू, अधिक रैम क्षमता व बेहतर स्टोरेज ऑप्शन के अलावा आइमैक के पास है अपग्रेड होने का नैनो ग्लास डिस्प्ले में जैसा कि एप्पल के प्रो डिस्प्ले एक्सडीआर में देखा जाता है।

सिग्मा ने 85एमएम एफ 1.4 डीजी डीएन आर्ट का एलान किया ई माउंट व एल माउंट के लिए

सिग्मा ने लॉन्च किया अपना 85एमएम एफ 1.4 डीजी डीएन आर्ट, एक फास्ट पोर्ट्रेट प्राइम सोनी ई व पैनासॉनिक / लीका / सिग्मा एल माउंट के लिए। इस लेंस में है 15 एलिमेंट्स, जिसमें एक एस्फेरिकल व पांच एसएलडी हैं। इसमें 11 अपर्चर ब्लेड व इसके फोकस यूनिट को हाई स्पीड स्टेपिंग मोटर के द्वारा चलाया जाता है। 85 एमएम एफ 1.4 की न्यूनतम फोकस दूरी है 0.85 एम (34") व अधिकतम मैग्निफिकेशन है 0.12एक्स।

निकॉन ने रिलीज किया बीटा वर्जन वेबकैम यूटिलिटी विंडोज़ के लिए सपोर्ट के साथ, कुछ चुनिंदा डीएसएलआर व मिररलेस कैमरा के लिए

निकॉन ने वेबकॉम यूटिलिटी के लिए भले ही देरी की है लेकिन इसका विंडोज़ वर्जन अंततः आ गया है और कंपैटिबल निकॉन डीएसएलआर व मिररलेस कैमरों के साथ फुटेज स्ट्रीम करने के तैयार है।

ऑटोमॉस ने रिलीज किया फुल निंजा वी फर्मवेयर अपडेट 5.9के 12-बिट प्रोरिस रॉ पैनासानिक एस1 एच को रिकॉर्ड करने के लिए

ऑटोमॉन से निंजा वी मॉनिटर/ रिकॉर्डर के लिए फुल फर्मवेयर का एलान किया जिससे 5.9के प्रोरेस रॉ वीडियो कैप्चर की जा सकती है।

इस 3डी प्रिंटेड एसेसरी से इंस्टैक्स मिनी 90 कैमरा से स्प्लिट डबल एक्सपोजर पर शूट करना संभव

लोमोग्रैफी कई इंस्टैंट कैमरों के लिए अपना स्प्लिटज़र देता है। लेकिन फूजीफिल्म इंस्टैक्स मिनी 90 इसमें से एक नहीं है।

ब्लैकमैजिक ने बीआरएडब्लू 2.0 के साथ डाविंची रिजाल्व 16.3 अपडेट के लिए विंडो सपोर्ट जोड़ा

डाविंची रिजॉल्व 16.3, डाविंची रिजॉल्व 16.3 स्टूडियो व ब्लैकमैजिक रॉ 2.0 के दो बीटा अपडेट देते हैं विंडोज कम्प्यूटर पर ब्लैकमैजिक आरएडब्लू 2.0 को देखने व एडिट करने की क्षमता।

ओपन सोर्स रॉ प्रोसेसर डार्कटेबल को मिला 3.2 अपडेट

महंगे स्टैंडअलोन व सब्सिक्रिप्शन आधारित फोटो एडिटिंग सॉफ्टवेयर का विकल्प है डार्कटेबल जैसे ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर। अपनी नई रिलीज में, डार्कटेबल वजर्न 3.2 में कई नए फीचर्स है सुधार हैं।

फोटोडिऑक्स का नए अडैप्टर लीका एम माउंट लेंसेज को फूजीफिल्म एक्स सीरीज कैमरा पर ऑटोफॉकस देता है

फोटोडिऑक्स का नया प्रो प्रॉन्टो एएफ अडैप्टर लीका एम माउंट लेंस के लिए लाया है एएफ एस व एएफ सी ऑटोफोकस क्षमता।

डीजेआइ का नया मेविक एयर 2 फर्मवेयर अपडेट देता है 4×जूम, 4के हाइपरलैप्स व और भी बहुत कुछ

इस हफ्ते के शुरूआत में, डीजेआइ ने मेविक एयर 2के लिए अपना फर्मवेयर अपडेट किया। इसमें 4×जूम है व 4के हाइपरलैप्स रिकॉर्ड करने की क्षमता के साथ और भी बहुत कुछ है।

अपने फोकस (Phocus) मोबाइल 2 एप्लिकेशन के लिए हैसलब्लैड ने आइफोन कनेक्टिविटी जोड़ी

फोकस (Phocus) मोबाइल 2 ने हैसलब्लैड मिररलेस फोटोग्राफर्स को रिमोट कंट्रोल, प्रोसेस व साल भर के लिए आइपैड पर इमेज शेयर करने की सुविधा दी है। फोकस मोबाइल 2 में नया अपडेट के बाद अब फोटोग्राफर्स यह सभी फंक्शन आइफोन में कर सकेंगे।

ऑल डिजिटल अडोब मैक्स 2020 कॉन्फ्रेंस के लिए फ्री रजिस्ट्रेशन

19-21 अक्टूबर को होने वाले इस कार्यक्रम में 250 से अधिक स्पीकर हिस्सा लेंगे। इनमें एनी लीबोविट्ज़, टाइलर द क्रिएटर, एवा डू वर्ने, किएनू वीविस व अन्य का नाम है।

गूगल इमेज जल्द ही इमेज पर विस्तृत लाइसेंसिंग जानकारी ले कर आएगा

गूगल अगली गर्मियों में यह नया डिस्प्ले फीचर लाकर उनके लिए आसान बना रहा है जो गूगल इमेज इस्तेमाल करते हैं लाइसिंसिंग जानकारी के लिए और फोटोग्राफर्स के लिए जिन्हें अपने काम का भुगतान मिलता है।

Zhiyun ने बेहतर स्पीड के वादे के साथ क्रेन 2 एस गिंबल का एलान किया

उत्साही व जानकार लोगों ने Zhiyun के क्रेन 2 गिंबल की सराहना की थी। अब इसने अपने नए 2एस क्रेन मॉडल का एलान किया है। यह बेहतर स्पीड, प्रदर्शन देगा।

फाइनल कट प्रो× 10.4.9 प्रोरेस रॉ कैमरा को देता है बेहतर वर्टिकल एडिटिंग व और भी बहुत कुछ

नया अपडेट प्रोरेस रॉ वर्कफ्लो को देता है सुधार व बेहतर प्रॉक्सी विकल्प, बेहतर वर्टिकल वीडियो एडिटिंग व बहुत कुछ।

डीजेआइ देता है नया स्मार्टफोन गिंबल, ऑस्मो मोबाइल 4

अपडेटेड गिंबल में है नया मैग्निटिक माउंटिंग प्वाइंट, नया रंग व कई शूटिंग मोड ताकि स्मार्टफोन कैमरा का दुरूस्त रूप से उपयोग हो पाए।

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 4 अंक : 03 | लखनऊ, रविवार, 6 सितम्बर 2020 से 5 अक्टूबर 2020 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 10 रूपये

सिनेमा/सिनेमेटोग्राफी - पेज 4

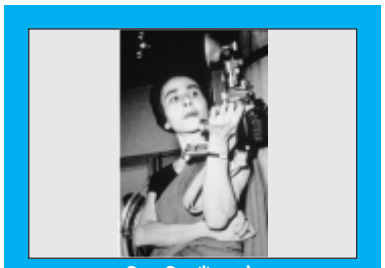

महान विभूतियाँ - पेज 6-7

कोविड-19 में फोटोग्राफी - पेज 8-9

स्मोक फोटोग्राफी - पेज 12

चाइल्ड फोटोग्राफी - पेज 16

निकॉन Z5 फुलफ्रेम मिररलेस : उत्कृष्ट प्रदर्शन एवं विश्वसनीयता

अपनी रचना से प्रेम हो जाएगा

फुल फ्रेम फोटोग्राफी की खूबसूरत दुनिया में आपका स्वागत है। निकॉन Z5 मिररलेस कैमरा हल्का, मजबूत है, संभालने में बेहद आसान व कई कंपैक्ट फुल फ्रेम लेंस के साथ कम्पैटिबल है। चाहे स्टिल हो या मूवीज़, यह देता नए स्तर की इमेज क्वालिटी।

24.3 एमपी, फुल फ्रेम, पोर्टेबल किट, 4K मूवी, वाईफाई/ब्लूटूथ

नया और बेजोड़ स्तर

यह फुल फ्रेम निकॉन Z5 एक लाजवाब मौका है अपनी फोटोज़ व मूवीज़ को एक अलग व नए स्तर पर ले जाने का। यह निकॉन जेड माउंट पर यह मिररलेस कैमरा बना है, वृहद फुल फ्रेम लेंस माउंट। कैमरे के सेंसर पर अधिक रोशनी जाती है जिससे आपको मिलेगी अधिक डीटेल, गहराई व रंग।

फुल फ्रेम में विजन

कुछ भी शूट करें, अपने फोटोज़ व वीडियोज़ को विस्तृत डीटेल दें। इसके फुल फ्रेम सेंसर, शक्तिशाली एक्सपीड 6 प्रोसेसर व अल्ट्रा शार्प ईवीएफ के साथ, निकॉन Z5 फुल फ्रेम में आसानी से क्रिएट करता है। आप क्रॉप भी बहुत डीटेल के साथ कर सकते हैं। यह प्रिंट व वेबसाइट के लिए एकदम सही है।

शानदार

पोर्ट्रेट, कम गहराई की मूवीज़। फुल फ्रेम 24.3 एमपी सीएमओएस सेंसर अपने अल्ट्रा वाइड जेड माउंट की लाइट एकत्र करने की क्षमताओं का लाभ उठाते हुए शानदार नतीजे देता है।

किसी भी रोशनी में चमकता हुआ

बदली रोशनी में खुद ब खुद ढल जाता है। शुक्रिया कीजिए कैमरे के चौड़े 100-51200 आइएसओ रेंज का। शोर की चिंता करने की जरूरत नहीं है: अपको साफ व शानदार इमेज व दोनों हाई व लो आइएसओ वैल्यू के साथ रेंज मिलेगा। इन कैमरा 5 एक्सिस वीआर इमेज स्टैबलाइजेशन आपको पांच स्टॉप धीमे तक शटर स्पीड पर शूट करने की सुविधा देता है। आप कोई भी निक्कॉर लेंस का इस्तेमाल कर रहे हो, स्टिल शार्प रहेंगे व वीडियो स्टिल रहेंगे।

छोटी किट, बड़े फायदे

फुल फ्रेम निकॉन Z5 पोर्टेबल व बेहद सक्षम है, वैसा ही है निक्कॉर जेड 24-50 एमएम लेंस जो कि कोर जे 5 किट में है। यह निक्कॉर जेड लेंस सबसे छोटा, हल्का फुल फ्रेम जूम लेंस है। कहीं भी, कभी भी व कुछ भी कैप्चर करने की आजादी देता है।

शार्प फोकस

273 प्वाइंट हाइब्रिड एएफ सिस्टम फास्ट, छोटा व सिल्की स्मूथ है। सब्जेक्ट फोकस में आकर फोकस में ही रहते हैं भले वह फ्रेम में हो या न हो।

परफेक्ट पोर्ट्रेट

लोगों के, कुत्तों व बिल्ल्यों के गजब शॉट्स। फोटोज़ शूट करने के दौरान, आप अपने सब्जेक्ट की आंख को लॉक कर फोकस वहां रख सकते हैं, भले ही वह हिल रहे हो।

ब्राइट फुल फ्रेम निक्कॉर जेड लेंस

गहराई व डीटेल का अनुभव लीजिए। निकॉन Z5 सभी निक्कॉर जेड फुल फ्रेम लेंस के कम्पैटिबल है और इसके लाइनअप को फैलाया जा रहा है। अल्ट्रा वाइड एंगल प्राइम से लेकर टेलीफोटो जूम, यह मिररलेस लेंस तेज, शांत व शार्प हैं। स्टिल व मूवीज़ का प्रदर्शन बेजोड़ है।

डुअल कार्ड स्लॉट

डुअल कार्ड स्लॉट यूएचएस II एसडी कार्ड को स्वीकार करते हैं। स्लाट आसान तरह से सेट हो जाते हैं, एक शूटिंग के लिए दूसरा बैकअप के लिए या एक में मूवी व दूसरे में स्टिल सेव करने के लिए।

मजबूत लेकिन हल्का

इसकी मैग्नीजियम अलॉय बॉडी मजबूत है लेकिन हल्की भी। बॉडी मौसमी धूल व नमी को दूर रखती है, खास तौर पर मूविंग पार्ट व बटन से।

निकॉन जेड इरगॉनॉमिक्स

इस फुल फ्रेम कैमरे की बॉडी थोड़ी छोटी होगी लेकिन हैंडल करने में बेहद आसान है। गहरी पकड़ है और की कंट्रोल अच्छे से जमा हैं।

अल्ट्रा शार्प इवीएफ

हाई डेफेनेशन 3690K डॉट ईवीएफ में आप जो देखेंगे वही आपको मिलेगा। एक्सपोजर, आइएसओ व व्हाइट बैलेंस रियल टाइम में उपयोग किया जाता है।

शूटिंग जारी रखिए

आप अपना निकॉन Z5 यूएसबी के

माध्यम से चार्ज कर सकते हैं। यह तब आरामदेह है जब आपको लंबे समय के लिए अंदर शूट करना हो या फिर टाइम लैप्स वीडियो बनानी हो।

टेढ़ा करिए, टच करिए, स्वाइप करिए

टेढ़ी टचस्क्रीन पर एंगल खोजिए और फोकस को टच करिए। आराम से फोटोज व वीडियो से स्वाइप कीजिए और डबल अैप कर इमेज एरिया में 100 फीसद नजारा देखिए।

आसान रचनात्मकता

अपने स्टिल व वीडियो को अपना बनाइए। निकॉन का पिक्चर कंट्रोल सिस्टम आपको क्रिएटिव फिल्टर अप्लाई करने की सहूलियत देता है और मॉनिटर या ईवीएफ में रियल टाइम में प्रिव्यू करने देता है।

4K मूवीज़

सामान्य लम्हों को सिनेमैटिक बनाइए। निकॉन Z5 कैप्चर करता है शार्प 4K अल्ट्रा एचडी फुटेज, व निक्कॉर जेड फुल फ्रेम लेंस देते हैं फील्ड की सुंदर गहराई। आप हैरान करने वाला टाइम लैप्स मूवीज़ इन कैमरा बना सकते हैं व फिल्म करते समय स्टिल ले सकते हैं।

पूरी तरह से कनेक्टेड

बिल्ट इन वाई फाई व ब्लूटूथ से शेयरिंग आसान हो जाती है, व निकॉन की स्नैप ब्रिज एप आपके फोन को एक ताकतवर एसेसरी बना देती है। फोटो व वीडियो को आसानी से ट्रांसफर कीजिए, या अपनी स्मार्ट डिवाइस को रिमोट मॉनिटर व कंट्रोलर बनाइए।

सिनेमा/सिनेमेटोग्राफी

डॉ0 आत्मप्रकाश सिंह, वाराणसी

सिनेमेटोग्राफी क्या है? और इसका महत्व कितना है? ये तो हम लोग समझ चुके हैं। इस बार सिनेमेटिक शूट को प्रभावशाली बनाने के लिए किस-किस तरह से कैमरा एंगल्स का प्रयोग होता है उसकी चर्चा करेंगे। वैसे बिना प्रत्यक्ष उदाहरण के सिनेमेटिक शूट को समझना और समझाना दोनों जटिल है फिर भी कोशिश करते हैं।

सिनेमेटिक वीडियो को प्रभावशाली रूप प्रदान करने के लिए कई तरह के कैमरा एंगेल्स का प्रयोग होता है जिनमें मूल रूप से तीन आधारभूत प्रकार (बेसिक) आते हैं। (चित्र संख्या 01)

01 आई-लेवल एंगल

02 लो-लेवल एंगल

03 हाई-लेवन एंगल

पहला समान्य एंगल जो कि आई लेवल एंगल कहा जाता है इसमें कैमरा विषयवस्तु (सब्जेक्ट) अथवा एक्टर के आई लेवल पर होता है। सामान्य एंगल शूट में एक्टर के हाव-भाव तथा सौन्दर्य को बहुत ही स्पष्ट ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार के शूट का इस्तेमाल ज्यादातर इंटरव्यू, गम्भीर चर्चा, बात-चीत तथा चेहरे की सुंदरता को दिखाने में लाया जाता है। जैसे अगर आप दुल्हन की सुंदरता और उसके भावों को स्पष्ट रूप से दिखाना चाहते हैं तो ये एंगल बहुत ज्यादा प्रभावशाली हो जाता है इसमें दर्शक का ध्यान पूर्णतः सब्जेक्ट पर रहता है। अगर कोई सन्देश या महत्वपूर्ण बात कही जा रही हो तो भी ये एंगल बहुत महत्वपूर्ण होता है।

दूसरा लो लेवल कैमरा एंगल है जिसके द्वारा विषयवस्तु को भव्यता प्रदान की जाती है। आजकल इसी एंगल में नायकों की एंट्री को दिखाने का चलन है। इस एंगल में शादी या किसी इवेंट की लोकेशन को भव्य और स्थाई बनाने में किया जाता है। इस एंगल में लोकेशन शूट करने से दर्शक को अहसास होता है कि आगे की घटनाएं इसी स्थान से जुड़ी हैं। अब अगर आप किसी दुल्हन की एंट्री लो एंगल शूट से शुरू करते हैं तो ये एक भव्य और प्रभावशाली एंट्री होती है। इसमें दुल्हन का पूरा सौन्दर्य और आकर्षण दिखाई पड़ता है। दर्शक का ध्यान दुल्हन की ओर बन जाता है। इस एंगल का प्रयोग हीरो को दमदार बनाने, ताकत, गर्व और घमण्ड को दिखाने में, लोकेशन का यादगार रखने में तथा अवांछित बैकग्राउंड को खत्म करने में किया जाता है।

तीसरा प्रकार है हाई लेवल कैमरा एंगल, इसका प्रयोग लोकेशन का विस्तार दिखाने, ऊपर से नीचे की ओर देखने के लिए, रहस्य, डर, एब्सट्रेक्ट सौन्दर्य, भय, पीड़ा, असमंजस आदि जैसे भावों को भी दिखाने में किया जाता है। इसके अलावा आप किसी पार्टी या आयोजन में हैं जो कि बहुत बड़े खुले स्थान पर हो रहा है तो हाई लेवल कैमरा एंगल उस पूरे इवेंट को उसमें लोगों की बड़ी संख्या में उपस्थिति को दिखाने के लिए प्रयोग किया जाता है। क्रेन और ड्रोन का इस्तेमाल इसी एंगल के शूट के लिए होता है। ये एंगल भी लोकेशन के आकार और सुंदरता को दिखाने में इस्तेमाल किया जाता है।

ये तीन बेसिक कैमरा एंगल हैं और इनका प्रयोग स्टिल फोटोज और सिनेमेटिक वीडियो बनाने दोनों में ही किया जाता है। अंतर इतना है कि सिनेमेटिक वीडियो में लगातार कैमरा एंगल को बदल-बदल कर एक ही स्टोरी लाइन कई तरह के भावों को प्रभावी रूप से प्रदर्शित किया जाता है। उदाहरण के लिए बाहुबली फिल्म का शिवलिंग उठाने वाले सीन में तीनों कैमरा एंगल से शूट हुआ है जिसमें नायक को, उसके आस-पास के वातावरण और लोगों को तथा नायक के दम और गर्व का बहुत ही प्रभावशाली प्रदर्शन हुआ है।

यहाँ एक बात ध्यान देने वाली ये है कि उपरोक्त तीनों कैमरा ऐंगल्स के आपने-अपने उपयोग हैं तथा भाव और परिस्थितियों के प्रदर्शन में तीनों के लिए अलग-अलग मान्य नियम हैं। लेकिन बावजूद इसके अगर हम सिनेमेटिक वीडियो शूट कर रहे हैं तो सिनेमेटोग्राफर अपने कौशल और सब्जेक्ट अपनी एक्टिंग की योग्यता से हर भाव को हर एंगल में दिखा सकता है। उदाहरण के लिए सौन्दर्य को दिखाने में तीनों ऐंगल का प्रयोग हो सकता है और भय या चिंता को दिखाने में भी तीनों एंगल प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

वैसे भी सिनेमेटोग्राफी या फोटोग्राफी दोनों ही नियमों और बन्धनों के दायरे से बाहर निकल कर निरन्तर रचनात्मक प्रयोगों के ओर अग्रसर होने वाली प्रक्रिया है। अगले अंकों में सिनेमेटोग्राफी के कंपोजिशन, लाइट तथा अन्य पहलुओं की चर्चा करेंगे।

चित्र संख्या 2 से 6 तक सिनेमेटिक विवाह वीडियो तथा बाहुबली फिल्म के चीडियो के स्क्रीन शॉट हैं जो साभार यू ट्यूब साइट से लिये गए हैं।

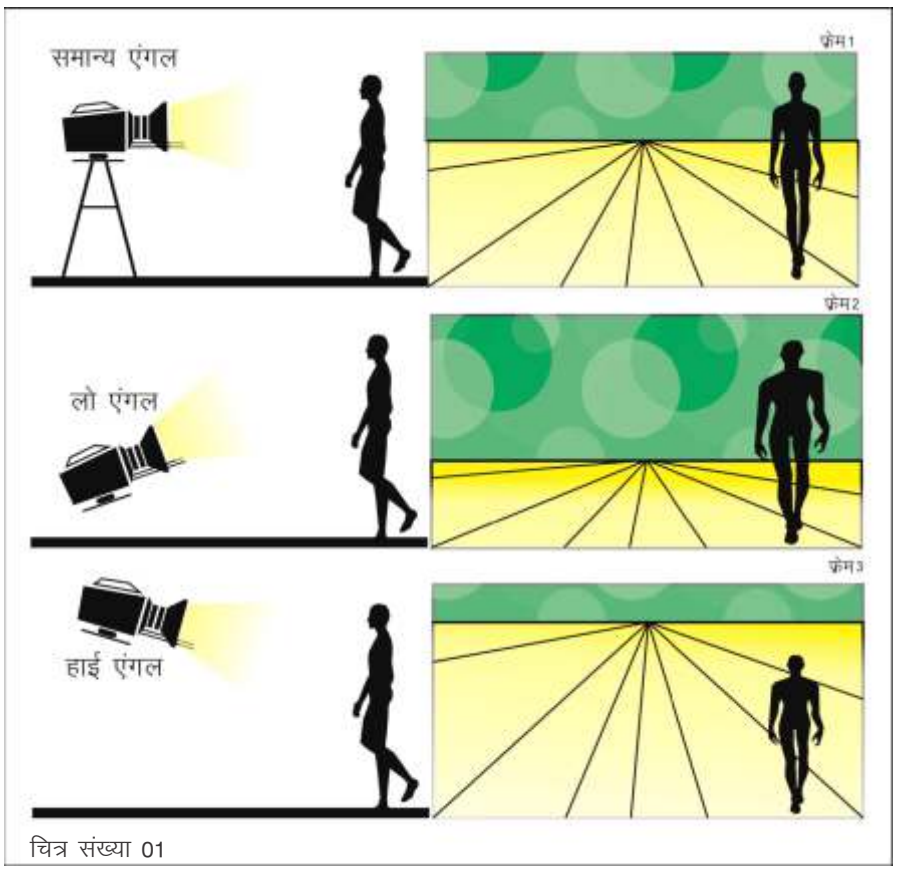

चित्र संख्या 01

चित्र संख्या 02

चित्र संख्या 03

चित्र संख्या 04

चित्र संख्या 05

चित्र संख्या 06

STUDIO NEWS
लखनऊ, रविवार, 6 सितम्बर 2020 से 5 अक्टूबर 2020

जीवन के साथ बिताए अंतरंग पलों का नाम फोटोग्राफी है। - बर्क उजले

एकेडेमिक एवं आर्ट फ़ोटोग्राफ़ी में: सैलोन व सर्किट का अनूठा संसार

वर्तमान समय में अधिकतर युवा छायाकारों के लिए (विजुअल/फ़ाइन आर्ट के छात्रों सहित) फ़ोटोग्राफ़ी एक अत्यंत सरल, पसंदीदा और लुभावना विषय बन गया है। अत्याधुनिक डिजिटल कैमरे एवं कैमरायुक्त मोबाइल फ़ोन ने इस शौक़ को और अधिक सरलतम बना दिया है। एक फ़िल्मों वाला ज़माना था जब 36 एक्सपोज़र वाली फ़िल्म में नए/शौक़िया छायाकारों की बड़ी मुश्किल से 10-15 फ़ोटो (नेगेटिव) सही निकल पाते थे बाक़ी या तो अंडर या फिर ओवर हो जाते थे। कारण ये था कि तस्वीर क्लिक करने से पहले प्री-व्यू की कोई व्यवस्था नहीं होती थी। अभी प्रत्येक व्यक्ति यह जान जाता है कि उसके द्वारा खिंची गयी तस्वीर कैसी आने वाली है। रही सही कसर "यूट्यूब" और "इंटरनेट" ने पूरी कर दी है और बंदा कुछ ही दिनों/महीनों में तथाकथित एक्सपर्ट फ़ोटोग्राफ़र बन जाता है।

तकनीक से मेरा न कोई विरोध है और ना विरोधाभास - 'प्लेट कैमरे' से 'टी.एल.आर.' फिर 'एस.एल.आर.' कालांतर में 'डी.एस.एल.आर.' (नवांकुरों और आधुनिक छायाकारों में सर्वाधिक प्रचलित) और अब 'मिररलेस' सभी की अपनी-अपनी उपयोगिता और कार्य है। इसमें से मैं लगभग सभी कैमरों की तकनीक जानता हूँ और कमोबेस काम किया है। मेरे समकालीन और वरिष्ठ कई छायाकारों ने निश्चित ही उपरोक्त तमाम तरीक़ों से कार्य किया ही होगा।

फ़ोटोग्राफ़ी को मुख्यतः दो वर्गों में बाँटा जा सकता है-

1. "व्यावसायिक फ़ोटोग्राफ़ी"- जो आप व्यावसायिक तौर पर अपने ग्राहकों के लिए उनकी आवश्यकतानुसार करतें हैं। (इस प्रकार की फ़ोटोग्राफ़ी के अच्छे-बुरे का निर्णय आपका ग्राहक ही करता है, क्योंकि उसने पैसे देकर आपकी सेवाओं को ख़रीदा है, भले ही उसे फ़ोटोग्राफ़ी का कोई पूर्व ज्ञान न हो)

2. "आर्ट फ़ोटोग्राफ़ी"- जो आप अपने पसंद से, आपके हृदय को अच्छा लगे वैसा करतें हैं। (ये फ़ोटोग्राफ़ी चूँकि आपके स्वयं के लिए होती है अतः आप ऐसे चित्र अपने मन मुताबिक़ बनाते हैं व प्रथम दृष्ट्या इसके निर्णायक भी आप ही होतें हैं)

आर्ट फ़ोटोग्राफ़ी जैसा कि इसके नाम से ही विदित है इसमें कला का किसी ना किसी रूप में समावेश होना चाहिए। एक सामान्य तस्वीर भी असाधारण दिखनी चाहिए बेशक फिर चाहे एक लैंड्स्केप, टेबल टॉप, पोर्ट्रेट या फिर स्ट्रीट फ़ोटोग्राफ़ी ही क्यूँ ना हो।

साथियों हम सभी जानते हैं कि फ़ोटोग्राफ़ी के आविर्भाव से लेकर आज तक इस विधा में अलग-अलग छायाकारों ने प्रयोग किए हैं। इसमें डिट्रॉट, मिशिगन (अमेरिका) में 11 जून 1935 में जन्मे 'श्री जेरी एन अल्समैन' का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। 20वीं सदी के इस छायाकार ने 'फ़ोटो मोनताज़िंग' में डार्क रूम तकनीक से अद्भुद कार्य किए हैं। कालांतर में कई विदेशी और देशी छायाकारों ने इस विधा में काफ़ी प्रयोग किए। फ़ोटो कम्पोज़िट / मोंटाज पद्धति में छायाकार अपने द्वारा खींचे गए कई छायाचित्रों को जोड़कर एक नया चित्र बनाता है, यह चित्र कोई विषय विशेष पर आधारित अर्थात एक 'थीम बेस' होते हैं। जैसे अपने मन में तरंगित होने वाली भावनाओं को एक कलाकार कैन्वस पर उकेरता है और यदि उसे मछलियों को आकाश में उड़ता हुआ दिखाना होता है तो दिखाता है, इसी प्रकार छायाकार भी अपने मन की भावनाओं को अपने छायाचित्रों को खींचकर फिर उपलब्ध डिजिटल माध्यम से उसे एक कलात्मक रूप से प्रस्तुत करता है और अब ऐसे तस्वीरों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल गयी है।

सैलोनः WIKIPEDIA स्रोत के अनुसार SALON (सैलोन) शब्द का प्रथम आविर्भाव फ्रांस में सन 1664 में हुआ जो कि इटालियन शब्द SALONE से आया और इसका अर्थ होता था "एक इतालवी इमारत का बड़ा स्वागत कक्ष" (THE LARGE RECEPTION HALL OF ITALIAN MAISIONS)। इस बड़े कक्ष में पेंटिंग, मूर्तियाँ इत्यादि प्रदर्शित की जाती रही होंगी और लोगों का समूह उन्हें प्रदर्शनी के रूप में देखता होगा। कालांतर में फ़ोटोग्राफ़ी के अविष्कार के पश्चात यह प्रक्रिया जारी रही होगी और फ़ोटोग्राफ़ी की प्रदर्शनी का यह सिलसिला ज़ारी हुआ होगा।

वर्तमान परिपेक्ष्य में "फ़ोटोग्राफ़ी सैलोन" आर्ट फ़ोटोग्राफ़ी की एक ऐसी प्रतियोगिता है जिसमें आयोजकों द्वारा विभिन्न श्रेणियों में छायाचित्र आमंत्रित किए जाते हैं। मुख्य रूप से ये श्रेणियाँ 1. ओपन कलर, 2. ओपन मोनोक्रोम, 3. ट्रैवल, 4. नेचर, 5. जर्नलिज़्म, 6. क्रिएटिव, 7. अन्य थीम में होतीं है। यहाँ एक बात का उल्लेख करना अत्यंत आवश्यक है कि क्रिएटिव श्रेणी की सभी रंगीन तस्वीरें ओपन कलर श्रेणी में तथा ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीरें ओपन मोनोक्रोम श्रेणी में शामिल हो सकतीं हैं। प्रत्येक श्रेणी में अधिकतम 4 चित्र अपलोड/जमा किए जा सकतें हैं। चित्रों का डिजिटल साइज़ सामान्यतया HORIZONTAL X VERTICAL में 1920 × 1024 पिक्सल या 768 × 512 पिक्सल में तथा 300 या 72 DPI में होता है एवं फ़ाइल साइज़ 2 MB के अंदर होता है ताकि फ़ोटो शीघ्रता से अपलोड हो सके। सभी चित्र डिजिटल फ़ारमेट में आयोजकों द्वारा उपलब्ध कराए गए एक विशेष प्रकार के वेब साइट में प्रतियोगियों द्वारा अपलोड किए जातें हैं। ये चित्र वेबमास्टर द्वारा बनाए गए वेब साइट में आसानी से अपलोड हो जाते हैं। ये कार्य एक साथ ही तीन चरणों में (फ़ॉर्म भरना/ फ़ोटो अपलोड करना व फ़ीस जमा करना) किया जाता है। सैलोन (प्रतियोगिता) में प्रविष्टि जमा करने की आरम्भ और अंतिम तिथि होती है जो लगभग एक से डेढ़ माह की होती है। इस समय के अंदर ही चित्रों को जमा करने की पूरी प्रक्रिया समाप्त कर लेनी होती है। अंतिम तिथि तक निर्धारित शुल्क जमा ना करने की स्थिति में छायाचित्र जज़िंग प्रक्रिया में शामिल नहीं किए जाते। प्रत्येक जज़िंग में अमूमन 3-5 जज होते हैं, जज उपलब्ध गाइड लाइन के आधार पर प्रत्येक श्रेणी के हर छायाचित्र को नम्बर देता है और उसी आधार पर स्वीकृति, रिबन, योग्यता प्रमाण पत्र या ब्रोंज-सिल्वर-गोल्ड मेडल दिए जातें हैं। इन्ही स्वीकृतियों, मेडल इत्यादि के आधार पर आगे चलकर विश्व के छायांकन संगठनों द्वारा DISTINCTION या HONOUR प्रदान किए जाते हैं जिसे छायाकार आजीवन अपने नाम के साथ प्रयोग कर सकता है जैसे अन्य प्रोफ़ेशनल लोग (डॉक्टर, इंजीनियर, CA, आर्किटेक्ट, सेना के लोग इत्यादि) अपने नाम के साथ प्रयोग करतें हैं।

छायाकारी के क्षेत्र में प्रमुख DISTINCTION:

FRPS; ARPS (ENGLAND), MFIAP; EFIAP; AFIAP (FRANCE/BELGIUM), MPSA; EPSA; APSA (USA), MFIP; EFIP; AFIP (INDIA), FIIPC, AIIPC (INDIA) इत्यादि हैं। इसके अतिरिक्त भी पूरे विश्व में स्थापित फ़ोटोग्राफ़ी के कई सारे संगठन, क्लब, सोसाइटी भी तमाम छायाकारों के बारे में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करतें रहतें हैं व 19 अगस्त-विश्व फ़ोटोग्राफ़ी दिवस पर या अपने स्थापना दिवस पर विभिन्न कला-छायाकारों को HONORARY GRAND MASTER या HONORARY FELLOWSHIP प्रदान करके अनुग्रहीत होतें हैं। भारतवर्ष में भी ऐसे फ़ोटो-आर्टिस्ट की काफ़ी संख्या है किंतु सर्वाधिक संख्या पश्चिम बंगाल एवं कर्नाटक में है। वैसे पूरे भारत में प्रत्येक राज्य में इस प्रकार के DISTINCTION / HONOUR प्राप्त छायाकारों की संख्या कमोबेश है।

चर्चित फ़ोटो पत्रिका स्टूडियो न्यूज़ के महान विभूतियाँ नामक स्तम्भ में प्रकाशित छायाकारों में लगभग सभी छायाकार किसी न किसी DISTINCTION या HONOUR से सम्मानित रहे हैं।

सर्किटः सर्किट, सैलोन का ही विस्तारित रूप है। सर्किट (प्रतियोगिता) में जज़िंग की प्रक्रिया कम से कम तीन स्थानों पर होती है और छायाचित्रों के स्वीकृति की सम्भावना तीन गुना बढ़ जाती है। नए लोगों को यदि ऐसे प्रतियोगिता में सहभागिता करनी हो तो सर्किट से ही शुरूआत करनी चाहिए, एक तो अपेक्षाकृत इसमें शुल्क कम होता है दूसरे छायाचित्रों के चयन की सम्भावना भी बढ़ जाती है। इस लेख के साथ मैं नमूने के तौर पर कुछ छायाचित्र भी साझा कर रहा हूँ शायद आपके लिए लाभप्रद हों।

यदि मैं अपनी बात करूँ तो मैंने स्लाइड फ़िल्म के युग में, नेगेटिव/प्रिंट के समय और आज पूर्ण डिजिटल काल में भी अपनी कृतियाँ देश-विदेश के सैलोन व सर्किट में एक EXHIBITOR के रूप में भेजता रहता हूँ और व्यावसायिक तौर से पूर्णकालिक कामर्शियल फ़ोटोग्राफ़र व अंशकालिक फ़ोटोग्राफ़ी मेंटॉर हूँ।

ओपन कलर

ओपन मोनोक्रोम

क्रिएटिव

ट्रैवल

नेचर

जर्नलिज़्म

महान विभूतियाँ

होमई व्यारावाला

(9 दिसंबर 1913 - 15 जनवरी 2012)

स्टूडियो न्यूज का यह अंक भारत की पहली महिला फोटोजर्नलिस्ट मैडम होमई व्यारावाला को समर्पित है। वह फोटोजर्नलिस्टिक आर्ट की बेहतरीन रचयिता थीं।

भारत पारसी समाज के चंद प्रतिभाशील विभूतियों के कारण गौरवांवित है। होमई व्यारावाला, जो कि भारत की पहली महिला फोटोजर्नलिस्ट थीं, वो 'डालडा' के उपनाम से अधिक जानी जाती थीं। उनका जन्म 1913 में पारसी (ज़ोराषट्रियन) समुदाय में गुजरात के नवासरी नामक स्थान में हुआ था।

चूंकि उनके पिता एक थिएटर ग्रुप में अभिनेता थे, उनका परिवार एक जगह से दूसरी जगह जाता रहता, उनका बचपन अधिकतर मुंबई में बीता। स्कूल में उन्होंने फोटोग्राफी सीखी और 1941 में अपने शिक्षक मनैकशॉ व्यारावाला से विवाह किया, जो अखबारों में फ्रीलांस फोटोग्राफी का कार्य किया करते थे। 1942 में दोनों को ब्रिटिश इन्फॉर्मेशन सर्विस ने नई दिल्ली में ब्यूरो खोलने के लिए चुन लिया।

होमई ने पहले बाम्बे विश्वविद्यालय से पढ़ाई की और बाद में सर जेजे स्कूल ऑफ आर्ट से। व्यारावाला महात्मा गांधी की शिक्षाओं की बड़ी प्रशंसक थीं व अपने जीवन में भी उन्हें अपनाती थीं। सालों तक उन्होंने सादा जीवन बिताया। कुछ वर्षों तक वह लगभग गुमनाम ही रहीं।

उन्होंने 1930 में अपना करियर शुरू किया और राष्ट्रीय स्तर पर नोटिस मिलने के बाद 1942 में वह परिवार के साथ मुंबई आ गईं। इसके बाद 30 सालों तक उन्होंने प्रेस फोटोग्राफर के तौर पर काम करते हुए कई पॉलिटिकल व राष्ट्रीय लीडर्स को फोटोग्राफ किया, इनमें गांधी, नेहरू, जिन्नाह, इंदिरा गांधी व नेहरू-गांधी परिवार शामिल है।

द्वितीय विश्व युद्ध की शुरूआत में उन्होंने बॉम्बे की मैगजीन 'दि इलस्ट्रेटर वीकली ऑफ इंडिया' में 1970 तक असाइनमेंट किए। उनकी कई ब्लैक व व्हाइट फोटो छपी, जो बाद में बेहद प्रतिष्ठित हुईं।

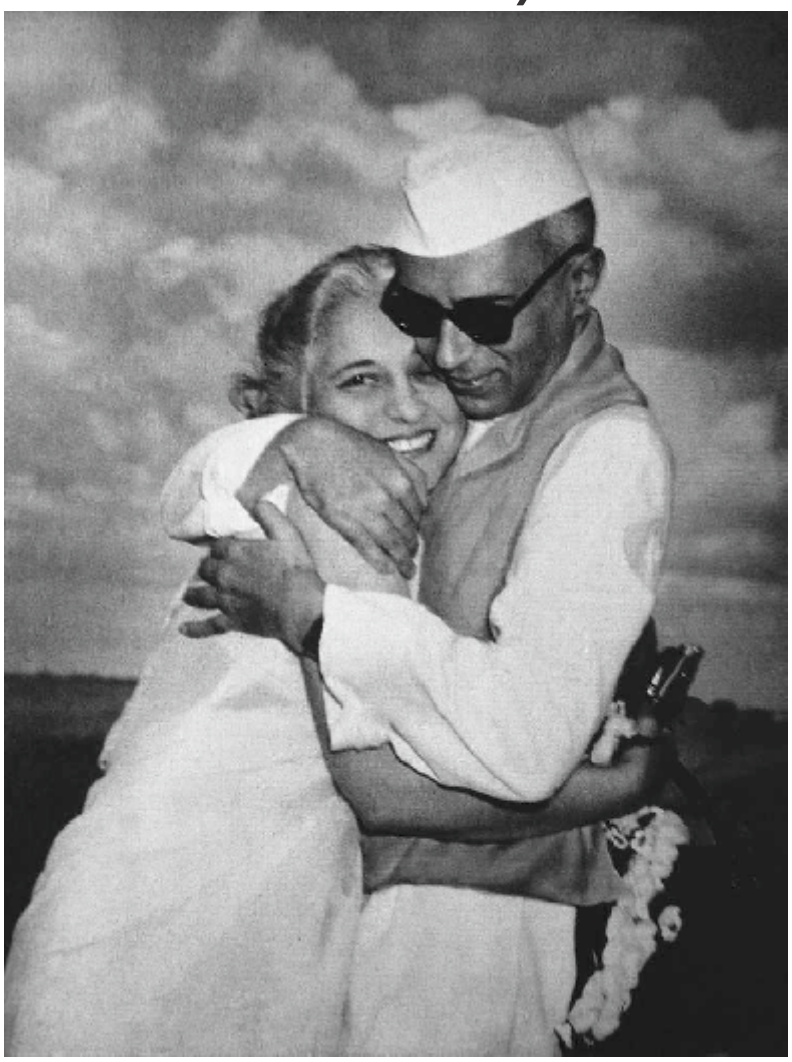

Vijayalakshmi Pandit & Pt. Jawaharlal Nehru

पहले उन्होंने अपने पति की असिस्टेंट के रूप में काम किया और बाद में खुद कार्य करना शुरू कर दिया, दिल्ली की सड़कों पर साइकिल से वह कंधे पर कैमरा लटका कर निकल जाती थीं। वह अकसर दो कैमरे साथ रखती थीं - 1930 का रोलीफ्लैक्स व 1940 का पेसमेकर स्पीड ग्रैफिक।

बतौर महिला, वह बेहद शालीन रूप से पेश आती थीं। उनकी उपस्थिति दोस्ताना थी। पंडित नेहरू उनकी शालीनता को बेहद सराहते थे।

1930 के करीब वह बहुत सक्रिय हुईं, व 1970 में सेवानिवृत्त हो गईं। 2010 में उन्हें भारत सरकार द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्रदान किया गया और 2011 में उन्हें देश के दूसरे सर्वोच्च सिविलियन अवॉर्ड 'पद्म विभूषण' से अलंकृत किया गया। 2010 में उन्होंने अपना संपूर्ण प्रिंट, निगेटिव्स, कैमरे व अन्य कलेक्शन नई दिल्ली के अल्काज़ी फाउंडेशन ऑफ आर्ट्स को दे दिया, ताकि उसे सुरक्षित रखा जा सके। उनके काम को नेशनल गैलरी ऑफ मार्डन आर्ट, नई दिल्ली में भी प्रदर्शित किया गया, ताकि उनकी मेहनत और संग्रह पब्लिक देख सके।

उन्होंने अपनी फोटो इमेज बेहद शानदार तरह से रचीं, उनके मन के भीतर की खूबसूरती जैसी। उनके कार्य सदियों तक याद रखा जाएगा।

मैंने इन शानदार विभूति को नई दिल्ली में हुए इंडिया इंटरनेशनल फोटोग्राफिक काउंसिल के एक कार्यक्रम में देखा था लेकिन उनसे बात करने का अवसर नहीं मिल पाया। उनके मातृत्व व्यवहार व

For peace & freedom

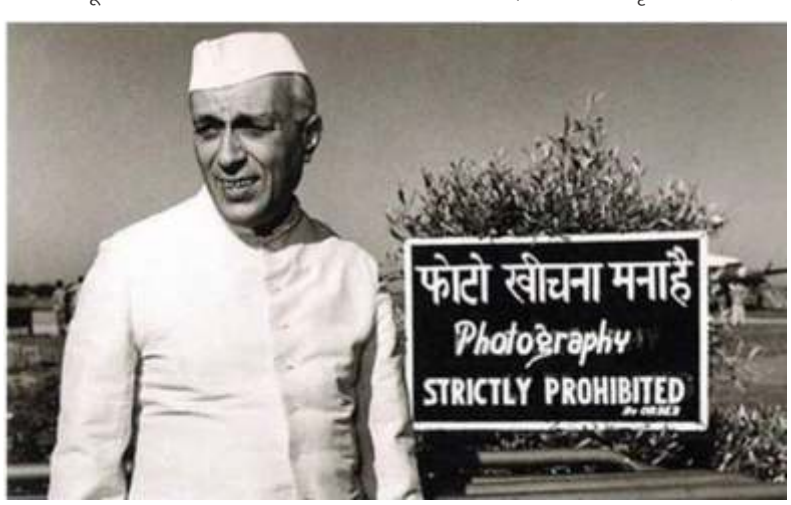

Candid picture of Pt. Nehru

STUDIO NEWS
लखनऊ, रविवार, 6 सितम्बर 2020 से 5 अक्टूबर 2020

फोटोग्राफी वह कहानी है जिसे शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना संभव नहीं है। - डस्टिन स्पार्क्स

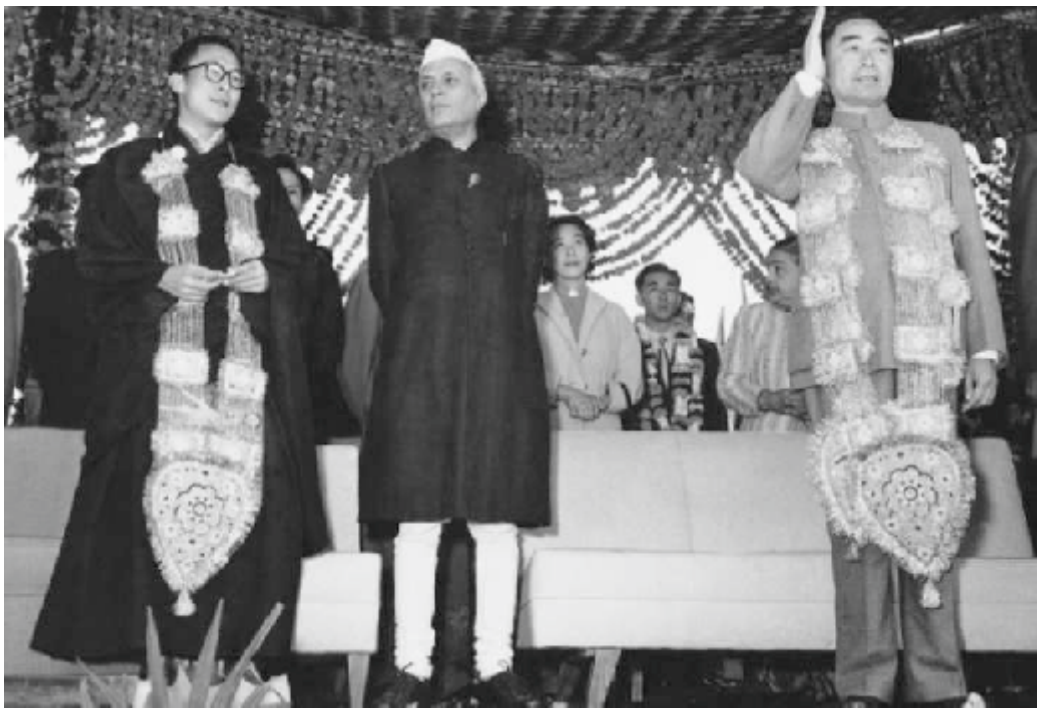

Pt. Nehru with foreign dignetries

Dalai Lama crossing to India

Pt. Jawaharlal Nehru, Sarvapalli Radhakrishnan, Chau En-lai, Dr. Rajendra Prasad

सौम्यता ने निसंदेह मुझे आकर्षित किया। दि नेशनल गैलरी ऑफ मॉर्डर्न आर्ट, नई दिल्ली व अल्काज़ी फाउंडेशन फॉर आर्ट द्वारा उनके कार्य पर आयोजित हुई प्रदर्शनी को देखने का सौभाग्य मुझे मिला। इसमें भारत की पहली फोटोजर्नलिस्ट का इलस्ट्रेटेड सफर दिखाया गया।

होमई का महान कार्य उनके संग्रह में उपस्थित वृहद तस्वीरों के माध्यम से दिखाई देता है। स्वतंत्रता का हर्ष भी है इसमें व अधूरे वादों की उदासी भी। वह उस दौर में भारत की पहली महिला फोटोजर्नलिस्ट थीं, और एस एमय एक पुरूषवादी समाज में खुद को बनाए रखना एक बेहद अहम बात रही होगी, जिसके बावजूद उन्होंने सफलता हासिल की।

यह एक कड़वा सत्य है कि वेस्टर्न फोटोजर्नलिस्ट जो भारत आये जैसे कि हेनरी कार्टिर-ब्रेसों व मारगरेट ब्रुक्र-व्हाइट को भारतीय हस्तियों से अधिक तवज्जो मिली है।

अपने करियर में होमई व्यारावाला ने अंतरराष्ट्रीय विभूतियों की कई यादगार तस्वीरें ली हैं, लेकिन उनके पसंदीदा भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। अधिकतर तस्वीरें उनके उपनाम डालडा 13 के नाम से छपी हैं। उनका जन्म 1913 में हुआ इसलिए उन्होंने यह नाम अपने लिए चुना। यह भी कहा जाता है कि वह अपने पति से 13 साल की उम्र में मिलीं व उनकी पहली कार का नंबरप्लेट डीएलडी 13 था। व्यारावाला का अपना एक अलग ही स्टाइल था।

एक बार, 1962 में एक फोटोशूट के लिए श्रीमति कैनेडी की प्रतीक्षा करते हुए व्यारावाला की एक सहकर्मी ने एक अन्य फोटोग्राफर के कान में कहा "इन्हें अभी तक ठीक से तैयार होना भी नहीं आया है।" व्यारावाला वेस्टर्न पारसी समुदाय से थीं लेकिन वह अधिकतर साड़ी ही पहनती थीं। खासतौर पर किसी असाइनमेंट के लिए। ऐसा करने वाली वह इकलौती महिला फोटोग्राफर थीं।

एक बार किसी ने उनसे पूछा कि उन्होंने अपने प्रोफेशन की ऊंचाई पर जाकर फोटोग्राफी क्यों छोड़ दी। उन्होंने इसका जवाब कुछ ऐसा दिया- अब इसका फायदा नहीं। फोटोग्राफर्स के लिए कुछ नियम होते हैं, हम बाकायदा एक ड्रेस कोड फॉलो करते हैं। एक दूसरे को आदर देते हैं। लेकिन अब परिस्थितियां बिलकुल बदल गई हैं। नई पीढ़ी के फोटोग्राफर्स केवल रूपये बनाने में लगे हैं। मैं इस भीड़ का हिस्सा नहीं बन सकती।

यहां एन. थियागराजन जी की एक बात बताना उचित होगा, जहाँ उन्होंने कहा था - जब नई पीढ़ी आई और नियम व कायदे तोड़ने शुरू किए तब 'मम्मी' यानि व्यारावाला को वह पसंद नहीं आया और उन्होंने उनके साथ पिक्चर शूट करनी बंद कर दी। उनके मातृत्व प्रेस से अभिभूत होकर एन. थियागराजन जी ने उन्हें मम्मी पुकारना शुरू कर दिया था और उनके सभी सहकर्मी भी उन्हें यही बुलाने लगे। उस वक्त भारत के राष्ट्रपति डॉ एस राधाकृष्णन उन्हें महिला दोस्त बुलाते थे।

इस अंक में छपी एक फोटोग्राफ में विजयलक्ष्मी पंडित व पंडित नेहरू हैं, यह व्यारावाला की पसंदीदा तस्वीर है। इसे व्यारावाला के इजिप्ट के एक मित्र ने हाथों से रंगा था, और यह व्यारावाला के मेहमान कक्ष में बहुत समय तक टंगी रही।

मनेकशॉ व्यारावाला से फोटोग्राफी सीखने के बाद होमई ने अपने करियर के तीन दशक दिल्ली में बिताए। 33 साल बतौर प्रेस फोटोग्राफर काम करने के बाद होमई ने 57 की उम्र पर इसे छोड़ दिया। 1989 तक उन्होंने गुमनामी का जीवन व्यतीत किया। वडोडरा में मृत्यु तक वह अकेले रहीं।

1970 में अपने पति की मृत्यु के बाद होमई व्यारावाला वडोडरा चली गईं और नई पीढ़ी के बुरे बर्ताव की वजह से फोटोग्राफी छोड़ने का निश्चय किया। अपने जीवन के आखिरी 40 से भी अधिक सालों तक उन्होंने एक भी तस्वीर नहीं ली। उनकी मृत्यु 15 जनवरी, 2012 को हुई।

भारत के सभी जनर्रलिस्ट फोटोग्राफर्स, खासतौर पर युवा और महिला जर्नलिष्ट फोटोग्राफर को इस बात का प्रण करना चाहिए, कि जनमानस तक सही और सच्ची खबरें ही पहुँचायी जायें, यही व्यारावाला के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

Rashtrapati Bhawan after shower

Fox hunt race

अनिल रिसाल सिंह
MFIAP (France), ARPS (Great Britain), Hon.FIP (India), Hon.LCC (India), FFIP (India), AIIPC (India), Hon.FSoF (India), Hon.FPAC (India), Hon.TPAS (India), Hon.FSAP (India), Hon.FICS (USA), Hon.PSGSPC (Cyprus), Hon.FPSNJ (America), Hon. Master-TPAS (India), Hon. Master-SAP (India), Hon.FWPAI (India), Hon.FGGC (India), Hon.GA-PSGSPC (Cyprus)
पूर्व अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ इण्डियन फोटोग्राफी

कोरोना: काफी कुछ खो गया, काफी कुछ खोएगा

मुकेश श्रीवास्तव
FIE, FFIP, EFIAP
इंजीनियर, फोटोग्राफर, लेखक,
पूर्व निदेशक (ई), भारत सरकार
निदेशक, सेण्टर फॉर विजुअल आर्ट्स
निकॉन मेण्टर (2015-2017)
एवं अध्यक्ष, धनबाद कैमरा क्लब

हम एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट से जूझ रहे हैं जो 75 वर्ष के इतिहास में विश्व ने नहीं देखा। इसमें लोग अपनी जान गंवा रहे हैं, पीड़ा में हैं, जिंदगियां खत्म हो रही हैं। यह महज एक स्वास्थ्य संकट नहीं, बल्कि उससे कहीं ज्यादा है। यह असल में भयंकर रूप से मानवता, आर्थिक व सामाजिक संकट है। कोरोनावायरस बीमारी यानी कोविड-19, जिसे डब्लू एच ओ यानी विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सर्वव्यापी महामारी की श्रेणी में डाल दिया है, वह समाज को बुरी तरह कुतर रहा है।

कोविड 19 का प्रकोप ने सभी श्रेणियों के लोगों पर है व उन क्षेत्रों में ज्यादा यह अधिक फैला है या जहां लोग सोशल डिस्टेंसिंग फॉलो नहीं कर रहे। इसके अलावा गरीबों, बुजुर्गों, दिव्यांगों, युवाओं को सबसे अधिक खतरा है। आंकड़ें बताते हैं कि इस वायरस का असर स्वास्थ्य व आर्थिक रूप से गरीब वर्ग पर अनुपातहीन तरह से पड़ा है। उदाहरण के तौर पर, वे लोग जिनके पास रहने को घर नहीं है वे उन्हें वायरस का डर ज्यादा है।

कोविड ने न केवल आम आदमी के दैनिक जीवन की रफ्तार को धीमा कर दिया है बल्कि पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था हिल गई है। इस आपदा ने उन हज़ारों लोगों व उनके परिवारीजनों पर सीधा प्रभाव डाला है जो कि या तो बीमार हैं या इस वायरस के कारण मृत्यु की गोद में समा चुके हैं। कोविड 19 इन्फेक्शन के सबसे आम लक्षण हैं बुखार, जुकाम, खांसी, हड्डियों में दर्द, सांस लेने में तकलीफ और निमोनिया।

यह एक नई बीमारी है जो कि मनुष्यों पर प्रभाव डाल रही है, इस कारण अभी तक इसका टीका भी नहीं उपलब्ध है। इसी कारण सावधानी बरतने पर जोर दिया जा रहा है। जैसे कि हाथों को धोना व सैनिटाइज करते रहना, चेहरे नाक व आंख को न छूना, बाहर निकला पड़े तो लोगों से दूरी बनाकर रखना, मास्क पहनना इत्यादि। क्षेत्रों के हिसाब से यह वायरस फैल रहा है। कई राष्ट्र सामूहिक सम्मेलनों को बंद कर रहे हैं ताकि एक जगह कई लोगों के जुटने से यह न फैले।

तमाम राष्ट्र अपने लोगों को घरों में बंद रहने की सलाह दे रहे हैं और इसे कड़ाई से पालन करने का आदेश भी दे चुके हैं। कोविड 19 ने तेजी से हमारे दैनिक जीवन, हमारा व्यापार, देश का व्यापार व तमाम चहल पहल इत्यादि पर सीधा असर डाला है।

इस बीमारी की पहचान शुरूआती स्टेज पर होना जरूरी है ताकि इसे एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैलने से कंट्रोल किया जा सके।

कई देशों ने उत्पादों का निर्माण कार्य धीमा कर दिया है। कई उद्योग व कई क्षेत्र इस बीमारी के कारण प्रभावित हुए हैं जैसे कि दवाई, सोलर पावर, पर्यटन, सूचना व इलेक्ट्रानिक्स इंडस्ट्री इत्यादि।

बड़े स्तर पर होने जा रहे टूर्नामेंट या तो स्थगित हो गए हैं या टाल दिए गए हैं। इन टूर्नामेंट के कारण होने जा रहे पर्यटन पर भी असर पड़ा। सांस्कृतिक, धर्म से जुड़े हुए व त्योहारों से जुड़े सम्मेलन रद कर दिए गए। लोगों के मस्तिष्क पर असर पड़ रहा है। होटल, रेस्त्रां, व धर्म से जुडी हुई जगहों को बंद कर दिया गया। फिल्म, प्ले, स्पोर्ट, जिम, पूल इत्यादि बंद हो गए।

सामाजिक प्रभाव:

समाज में अछूत जैसी भावना उत्पन्न हो गई है। ऑफिस में मास्क लगाकर काम करना भी शाप जैसा है (फिग 1) काफी हद तक यह हमारी भावनाओं को प्रभावित कर रहा है। न मेला हो रहे हैं न डिज़्नीलैंड खुले हैं, बच्चों को घरों में घुटन हो रही है (फिग 2-3)। युवा घरों के अंदर शतरंज खेल रहे हैं (फिग 4), व छोटे बच्चों ने पुराने खेलों में रूचि दिखाई है जैसे किट किट, कंचा, गोटी (फिग 5 से 8), इत्यादि।

रोमांस का अवसर न मिलने से युवा पीढ़ी भी घुटन महसूस कर रही है। मैंने ऐसी युवा पीढ़ी के लिए एक कहानी बनाई, जो कार से बाहर निकल रही है, उसने दस्ताने पहनने और चेहरे पर मास्क पहनने जैसी सभी सावधानियों का उपयोग करने के लिए दोस्त को फोन किया। मास्क पहने बिना दोस्त को करीब आने की अनुमति नहीं। (फिग 9 से 18)

ऐसा लगता है यह एक लंबा सफर है और यह परिवर्तन हमारे सोशल जीवन को ही बदल कर रख देगा।

Fig. 1

Fig. 2

Fig. 3

Fig. 4

Fig. 5

Fig. 6

Fig. 7

Fig. 8

STUDIO NEWS
लखनऊ, रविवार, 6 सितम्बर 2020 से 5 अक्टूबर 2020

एक अच्छी तस्वीर लेने के लिए उस में कुछ मानवीय भावना होना ज़रूरी है। - रॉबर्ट फ्रैंक

Fig. 9

Fig. 10

Fig. 11

Fig. 12

Fig. 13

Fig. 14

Fig. 15

Fig. 16

Fig. 17

Fig. 18

DSLR में ऑटोफोकस मोड्स और उनका उपयोग

कैमरों में ऑटोफोकस (AF) मोड्स और उनकी उपयोगिता को बता रही हैं, भारत में फोटोग्राफी में पीएच.डी. प्राप्त करने वाली पहली महिला, लिम्का बुक और इंडिया बुक रिकॉर्ड होल्डर एवं एमिटी यूनिवर्सिटी लखनऊ में असिस्टेंट प्रोफेसर

डॉ. तूलिका साहू

फोकस में शार्पनेस की कमी से उत्पन्न एक धुंधली छवि एक फोटोग्राफ को बर्बाद कर सकती है और आप इसकी मरम्मत पोस्ट-प्रोसेसिंग में भी नहीं कर सकते। फोकसिंग से मतलब अपनी फोटोग्राफ में उस वस्तु या बिंदु के चुनाव से है जिसे आप शार्प रखना और आकर्षण का केंद्र बनाना चाहते है। इसलिए यह समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है की चाहे एक फोटोग्राफ में उसे संपूर्ण बनाने वाले सारे एलिमेंट्स मौजूद हों, फोकसिंग के साथ की गयी छोटी सी भी गलती पूरे प्रयासों पर पानी फेर सकता है।

अधिकांश DSLR कैमरों में कई प्रकार के ऑटो फोकस मोड्स पाए जाते है और बेहतर परिणाम के लिए इन मोड्स कि कार्य प्रणाली को समझना बहुत ज़रूरी है वर्ना महंगे से महंगा कैमरा भी अच्छी और शार्प फोटो प्राप्त करने में आपकी कोई मदद नहीं कर पायेगा।

मैन्युअल फोकस आपको फोकसिंग पर अधिक नियंत्रण देने के साथ फोटो में कलात्मक प्रभाव, या कम रोशनी की स्थिति जैसे कठिन परिस्थितियों में फ़ोटो लेने में अधिक स्वतंत्रता देता है, परन्तु यह एक ऐसी स्किल है जो वर्षों के अनुभव से प्राप्त होती है। शुरूआत में मैनुअल फोकस को सेट करने में अधिक समय लग सकता है जिस कारण आप महत्वपूर्ण क्षणों को कैमरा में कैद करने से महरूम हो सकते हैं।

ऐसी परिस्थिति में ऑटोफोकस वह टूल है जो फोटोग्राफर के लिए काफी मदगार सिद्ध हो सकता है।

यह एक व्यावहारिक विकल्प है जो आपको काफी तेजी से फोकस करने की सुविधा देता है। और आप फोकस कि चिंता छोड़ फोटोग्राफी के अन्य रचनात्मक पहलुओं यथा कम्पोजीशन और एक्सपोजर जैसी चीजों पर ध्यान दे पाते हैं।

आप मैनुअल और ऑटोफोकस के बीच लेंस या कैमरे के माध्यम से स्विच कर सकते हैं। आपके कैमरा मॉडल के आधार पर, आपके पास इसके लिए एक समर्पित बटन होगा या इसे मेनू के माध्यम से भी एक्सेस कर सकते हैं।

ऑटो फोकस क्या है?

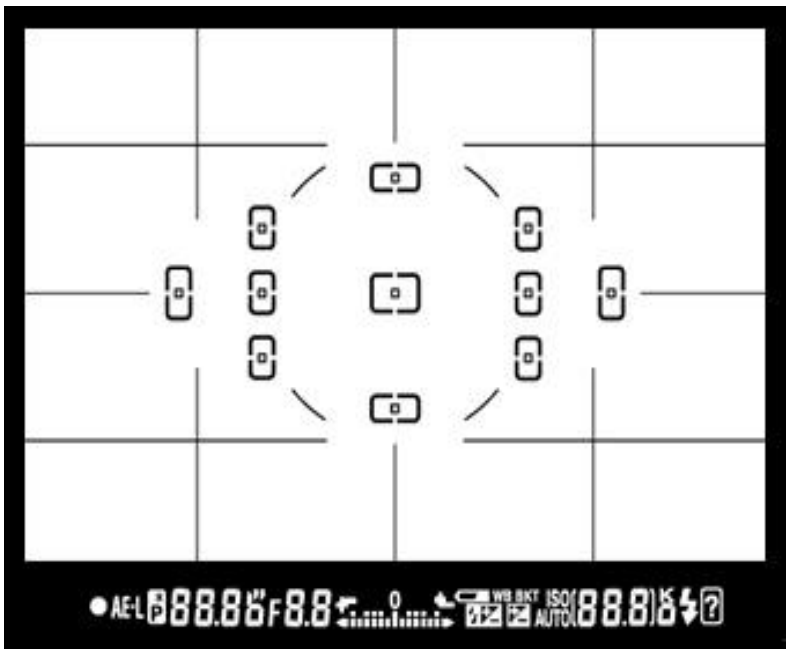

जब आप फ़ोकस सेट करते हैं, तो आप अपने लेंस एलिमेंट्स को इस तरह व्यवस्थित करते हैं कि लेंस तक पहुंचने वाली प्रकाश किरणों को एक स्थान पर इस तरह एकत्रित कर लिया जाये कि जिससे कैमरा सेंसर पर एक शार्प इमेज का निर्माण हो। सब्जेक्ट से परावर्तित हो कर और विभिन्न दूरी से आने वाले प्रकाश को केंद्रित करने के लिए लेंस एलिमेंट्स का अरैंजमेंट भीं अलग-अलग रखना होता है।

दूसरे शब्दों में, फोकस लेंस से वस्तुओं की दूरी का मामला है। ऑटोफोकस मोड में आप पूर्व-निर्धारित "फ़ोकस पॉइंट्स" का चयन करते हैं। इन बिंदुओं की संख्या आपके कैमरे पर निर्भर करती है। आप उन्हें व्यू फाइंडर के माध्यम से देख सकते हैं। आपका कैमरा उस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करेगा जो आपके द्वारा चुने गए फोकस बिंदु के सामने है।

विषय के अनुसार सर्वश्रेष्ठ फोकस मोड चयन के तरीके -

इन दिनों डिजिटल कैमरा में निम्नलिखित उन्नत ऑटोफोकस मोड उपलब्ध हैं हैं। वे फोटोग्राफर को केवल एक फोकस बिंदु का चयन करने से अधिक विकल्प प्रदान करते हैं।

Single-Point AF-Area Mode (Canon में Manual AF-Point)-

इस मोड में कैमरा केवल आपके द्वारा चयनित फोकस बिंदु का उपयोग करेगा।

Dynamic AF-Area Mode (Canon में AF Point Expansion)-

आप एक फोकस बिंदु का भी चयन करते हैं। लेकिन इस मोड में, यदि आपका विषय थोड़ा आगे बढ़ता है, तो कैमरा फोकस करने के लिए आसपास के फोकस बिंदुओं का उपयोग करेगा। आपको विषय को अपने कैमरे से ट्रैक करना होगा। इस तरह, आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि सब्जेक्ट पहले से चयनित फ़ोकस बिंदु के करीब बना रहे। यदि नहीं, तो आपका कैमरा दुबारा फोकस करने में सक्षम नहीं होगा।

3D Tracking -

इस सिस्टम में आप पहले फ़ोकस बिंदु का चयन करते हैं और एक एल्गोरिथ्म का उपयोग करते हुए आपका कैमरा, आपके उस सब्जेक्ट को ट्रैक करता है जिसे आपने फोकस किया है और जो गतिमान अवस्था या मूवमेंट में है। इसमें एक जोखिम यह होता है कि आपका कैमरा स्वयं ही किसी अन्य विषय का चुनाव कर सकता है और आपके चुने विषय या सब्जेक्ट के बदले दूसरे सब्जेक्ट पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय ले सकता है।

Auto-area AF - यह मोड पूरी तरह से स्वचालित है। कैमरा आपके लिए तय करता है कि किन फोकस बिंदुओं का उपयोग किया जाना है। यह कंट्रास्ट डिफरेंस के अनुसार फोटो में सब्जेक्ट चुनता है।

अधिकांश कैमरों में अलग-अलग स्थितियों में फोकस करने के लिए अलग-अलग ऑटोफोकस मोड होते हैं। आप कैमरा सेटिंग्स मेनू के माध्यम से या इसके लिए समर्पित बटन के उपयोग से वांछित मोड का चयन कर सकते हैं।

सबसे आम ऑटोफोकस मोड विकल्प हैं AF-S (Single Point), AF-C (Continuous) और AF-A (Automatic)

1. AF-S (Single Point) मोड-

यह एक बेसिक ऑटोफोकस मोड है जिसमे आप एक फ़ोकस बिंदु का उपयोग करके फ़ोकस करते हैं। कैमरा आपको डायल या नेविगेटर बटन्स के माध्यम से फोकसिंग बिंदु चुनने कि स्वतंत्रता प्रदान करता है। निकॉन कैमरे में इसे Single-Servo AF (AF-S) और कैनन कैमरे में इसे One-Shot AF के अलग-अलग नामों से जाना जाता है।

इस मोड का यह फायदा है कि जब आप शटर रिलीज़ को आधा दबाते हैं तो यह फोकस को ब्लॉक कर देता है। यह तब और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है जब आप फोकस बिंदु को बदले बिना छवि को फिर से कंपोज़ करना चाहते हैं। किन्तु AF-S मोड तब उपयोगी होता है जब विषय स्थिर हो या उसमे न के बराबर मूवमेंट हो। जैसे की लैंडस्केप या पोर्ट्रेट।

2. Continuous Servo AF (Nikon AF-C) और (Canon AI Servo)

एक और कैमरा फोकस मोड ऑटोफोकस कंटीन्यूअस मोड (AF-C) है। यह विशेष रूप से तब उपयोगी होता है जब आपकी फोटो का विषय घूम रहा हो। खेल की घटनाओं, वाहनों, जानवरों या बच्चों कि फोटोग्राफी के लिए यह एक बेहतरीन विकल्प है, जब आप शटर रिलीज़ को आधा दबाते हैं तो कैमरा फ़ोकस पॉइंट को लॉक नहीं करता है। इसके बजाय, यह आपके विषय को ट्रैक करता है और उसी के अनुसार रीफोकस करता है।

याद रखें कि जब आप इस ऑटोफोकस विकल्प का चयन करते हैं, तो आप फ़ोकस को लॉक नहीं कर सकते। इसका मतलब है कि आप अपने फ्रेम को दुबारा कंपोज़ भी नहीं कर सकते।

3. Autofocus Automatic (Nikon, AF-A) or AI Focus AF (Canon)

एक तीसरा विकल्प है: स्वचालित ऑटोफोकस। इस मोड में आपका कैमरा स्वयं ही विषय/सब्जेक्ट के बारे में अनुमान लगता है कि वह स्थिर है या गतिमान और उसी हिसाब से Single या Continuous AF मोड का चयन कर लेता है।

यह एक बेहतरीन विकल्प ज़रूर प्रतीत हो सकता है, परन्तु यह भ्रम कि स्थिति पैदा कर सकता है क्योंकि इस मोड में कैमरा दोनों मोड्स के बीच स्वतः स्विच करता रहता है। इससे यह जानना मुश्किल हो जाता है कि शटर रिलीज़ को आधा दबाने से फोकस लॉक होगा या सब्जेक्ट ट्रैक होगा।

फोकस एरिया और ऑटोफोकस मोड कॉम्बिनेशंस / संयोजन

(फोकस एरिया से सम्बंधित लेख अगस्त अंक में प्रकाशित)

फोकस एरिया और ऑटोफोकस मोड्स को एक दूसरे के साथ प्रयोग करने कि विधा सीख कर हम फोटोग्राफ को आश्चर्यजनक रूप से प्रभावशाली बना सकते है।

1. Single Point Area + AF-S Mode

स्टिल और लैंडस्केप जैसे स्थिर विषयों के लिए बिल्कुल सही। अगर मॉडल तेजी से आगे नहीं बढ़ रहा हो इसे पोर्ट्रेट के लिए भी उपयोग किया जा सकता है। इस कॉम्बिनेशन में आप एक फ़ोकस पॉइंट चुनते लेते हैं जिसे कैमरा यथावत रखता है।

2. Single Point Area + AF-C Mode

यह सेटिंग उस परिस्थिति में आदर्श है जब आपका सब्जेक्ट आगे बढ़ रहा हो, जैसे कि जानवर, बच्चे, खिलाडी आदि। ऐसे में आप एक फ़ोकस पॉइंट का चयन करते हैं और यदि विषय चलता है तो आपका कैमरा ज़रूरत पड़ने पर दुबारा फोकस करेगा। मगर यह केवल चयनित फ़ोकस बिंदु पर ही रीफ़ोकस करेगा, इसलिए आपको विषय को ट्रैक करने की आवश्यकता पड़ेगी।

3. Dynamic Area + AF-C Mode

जब विषय अप्रत्याशित तरीके से आगे बढ़ रहा हो तब यह एक उपयोगी सेटिंग साबित हो सकता है। इसमें फोटोग्राफर किसी एक फोकस बिंदु का चयन करता है और यदि विषय चलता है तो कैमरा उसे फोकस में बनाये रखने के लिए आसपास के फोकस बिंदुओं का उपयोग भी स्वयं ही कर लेता है।

आपको हर समय इसका उपयोग नहीं करना चाहिए। क्योंकि कैमरा मूवमेंट को ट्रैक कर सकता है और उसी के अनुसार रीफोकस कर सकता है तब यदि आपका विषय बैकग्राउंड से अलग-थलग नहीं है, तो आपका कैमरा भ्रमित हो सकता है। और यह एक ऐसे विषय पर फोकस कर सकता है जिसमे आपकी रूचि न हो।

इस कारण से, एक सिंगल फ़ोकस अभी भी डायनामिक एरिया / 3 डी ट्रैकिंग की तुलना में अधिक सटीक है। यदि आपका विषय आगे नहीं बढ़ रहा है, तो यह शार्प छवि पाने का एक बेहतर अवसर प्रदान करता है।

फोकस एरिया और ऑटोफोकस मोड कॉम्बिनेशंस / संयोजन जिनका उपयोग नहीं करना चाहिए

1. Dynamic Area + AF-S मोड

हालाँकि आपका कैमरा आपको इस संयोजन का चयन करने दे सकता है, पर ये दोनों एक साथ काम नहीं कर सकते क्योंकि एक तरफ आप कैमरा को जरूरत पड़ने पर रीफोकस करने के लिए कई फोकस बिंदुओं वाले क्षेत्र (डायनामिक एरिया) के उपयोग का विकल्प दे रहे हैं लेकिन वहीं आप इसे रीफोकस करने की अनुमति नहीं दे रहे हैं (AF-S मोड में यह विकल्प उपलब्ध नहीं होता)

इस स्थिति में डायनामिक एरिया डिसेबल्ड हो जाएगा और यह Single-Point के रूप में काम करेगा।

यदि आप इस विकल्प का चयन इसलिए करते हैं क्योंकि आपका विषय आगे बढ़ रहा है तो आप शॉट को मिस कर सकते हैं। क्योंकि इस सेटिंग पर आपका कैमरा ऐसे काम करेगा जैसे कि उसकी सेटिंग स्थिर सब्जेक्ट को शूट करने के लिए कि गयी हो।

2. 3D Tracking + AF-S मोड

उपरोक्त सेटिंग की तरह ही, कैमरा यहाँ भी रीफोकस नहीं कर सकेगा। 3D ट्रैकिंग अक्षम हो जाएगा और आप इस सेटिंग पर भी Single Point Area + AF-S मोड जैसी ही फोटो ले पाएंगे।

लाइव व्यू में ऑटोफोकस कैसे करें

जब आप लाइव दृश्य का उपयोग कर रहे होते हैं तो ऑटोफोकस मोड थोड़ा अलग तरीके से काम करता है। इस स्थिति में, आप फोकस करने के लिए स्क्रीन पर किसी भी बिंदु का चयन कर सकते हैं, न कि केवल पूर्वनिर्धारित फोकस बिंदुओं पर।

लाइव व्यू ऑटोफोकस मोड दृश्य में कंट्रास्ट का पता लगाकर काम करता है जबकि व्यूफ़ाइंडर फेज शिफ्ट सेंसर्स पर आधारित है। लाइव व्यू फोकसिंग धीमी होती है और यह रूके हुए सब्जेक्ट्स पर सटीकता से काम करता है। इसे AF-S मोड के साथ उपयोग करने पर आपको एक लाल वर्ग दिखाई देगा, जिसे आप एरो बटन्स का उपयोग करके स्क्रीन के चारों ओर ले जा सकते हैं।

कम प्रकाश (लो लाइट) में ऑटोफोकस मोड्स का उपयोग कैसे करें

कम रोशनी की स्थितियों में, आपका ऑटोफोकस परेशान कर सकता है ऐसे में ऑटो फोकस- असिस्ट बिल्ट - इन - लाइट का प्रयोग किया जाना चाहिए, जिसमे कैमरा सब्जेक्ट पर नारंगी-लाल प्रकाश डालेगा, जिससे फोकस करने में मदद मिलेगी।

लेकिन यह एक सही समाधान नहीं है। इसकी एक सीमित सीमा है, इसके लिए आपको अपने विषय से 0.5-3 मीटर के करीब होना पड़ेगा। दुसरे विकल्प के तौर पर आप सब्जेक्ट को फोकस करने के लिए कुछ अन्य प्रकाश स्रोतों जैसे कि टॉर्च इत्त्यादि का प्रयोग कर सकते है।

(सूचना - आवश्यकतानुसार कुछ फोटोग्राफ्स इंटरनेट से ली गयीं हैं जिनका एकमात्र उद्देश्य शैक्षणिक है, व्यवसायिक नहीं।)

स्मोक फोटोग्राफी

गणेश शर्मा
मेंटर एवं वेडिंग फोटोग्राफर

स्वप्न के कुछ रंग कलर स्मोक के माध्यम से चित्रों में भरे जाते हैं। आजकल फोटोशूट के लिए प्रॉप्स का प्रयोग बहुतायत होता है। एक महत्त्वपूर्ण प्रॉप कलर स्मोक से आप सभी अवश्य परिचित होंगे। यह एक ऐसा प्रॉप है जो चित्रों में जादूई प्रभाव उत्पन्न करता है। इसके प्रयोग से रंगीन फोटोग्राफी और भी रंगीन हो जाती हैं। आज कल प्री-वेडिंग फोटोशूट इसके बिना पूर्ण नहीं होता है। प्री-वेडिंग के अतिरिक्त सगाई या शादी के फोटो सत्र व अन्य शूट में भी इसका प्रयोग होता है। कलर स्मोक का प्रयोग कैसे कर सकते है और इसके प्रयोग में हमें क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए, इस लेख के माध्यम से हम जान सकते हैं।

कलर स्मोक जिन्हे कलर बम भी कहा जाता है, इन बमों का उपयोग करने के बारे में कोई नियम नहीं है। आप अपने मॉडल को स्मोक बम को पकड़ने के लिए कह सकते हैं, क्लाक वाइज या एंटी क्लॉक वाइज घुमाने के लिए कह सकते हैं और उन्हें चारों ओर रख भी सकते हैं।

मैं आमतौर पर प्री-वेडिंग फोटोग्राफी में रंगीन धुएं के बम को पसंद करता हूँ क्योंकि यह आकर्षक रंग प्रदान करता है। लेकिन कलर स्मोक का उपयोग करना हमेशा और जगह संभव नहीं होता है। असावधानी से प्रयोग करने पर आग का कारण हो सकता है। अगर आप इसका पहली बार प्रयोग करने जा रहे हैं तो हम आपको सलाह देते हैं कि जब तक आस-पास पानी न हो, गर्मी एवं पतझड़ के मौसम में इनका उपयोग करने से बचें। इसलिए इसके साथ बहुत सावधान रहें।

कलर स्मोक मार्केट में विभिन्न साइज में मिलते हैं, छोटे साइज का मूल्य कम होता है और यह कम समय तक सक्रिय रहता है और बड़े आकर वाला कलर स्मोक थोड़ा महंगा होता है और थोड़ा ज्यादा समय चलता है, जिस साइज कलर स्मोक चित्र में दिख रहे हैं लगभग 90-100 रूपये प्रति नग पड़ता है और 5 पीस की पैकिंग में आता है। प्रत्येक स्मोक बम पर उससे निकलने वाले धुंए का रंग लिखा होता है, जलाने पर लगभग 60 सेकेण्ड तक रंगीन धुंआ छोड़ता है, स्मोक बम को जलाने के शुरूआती 10 सेकेण्ड और आखिरी के 10 सेकेण्ड फोटोग्राफी हेतु उपयुक्त नहीं होते हैं क्योंकि इस समयावधि में पर्याप्त मात्रा में रंगीन धुंआ प्राप्त नहीं होता है।

पर्याप्त मात्रा में रक्खें - किसी शूट पर जाने से पूर्व पर्याप्त मात्रा में स्मोक बम रखना चाहिए। 1 डिब्बे में आपको मनचाहे रंग के अधिकतम 2 पीस ही रहते है, कभी-कभी यह फुस्स (काम न करना) भी हो जाता है। मेरे शूट में कई बार ऐसा हो चुका है जिसमे 2 कलर स्मोक के प्रयोग करते समय 1 कलर स्मोक ठीक तरह से काम किया और दूसरा फुस्स हो गया। तो पुनः 2 कलर स्मोक का प्रयोग करना पड़ा। शूट में कई बार हवा विलेन का रोल अदा करती है, तेज हवा में मनचाहे परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं। धुँआ कभी-कभी कपल के चेहरे पर आ जाता है, और कभी-कभी पोज़ को भी ढक लेता है। अच्छे परिणाम हेतु पुनः नए कलर बम का प्रयोग करना पड़ता है। अगर आपके पास पर्याप्त मात्रा में स्मोक बम अनुपलब्ध है तो आप और आपके क्लाइंट को निराशा हाथ लगेगी।

प्रयोग के समय सावधानियाँ बरतें - स्मोक बम के प्रयोग से हाथ और कपडे के थोड़ी मात्रा में जलने का खतरा रहता है, यह बम गर्म हो जाता है, लेकिन फिर भी इसे पकड़ना सुविधाजनक होता है। स्मोक बम को सबसे निचले हिस्से से ही पकड़ना सही रहता है, यद्यपि यह सुरक्षित है फिर भी एक "सुरक्षित" धुआं बम खतरनाक हो सकता है। कभी-कभी जलते समय यह धुएं के साथ चिंगारी भी छोड़ सकता है, इसे ध्यान में रख कर शूट करें। स्मोक बम को कभी भी कपल के दिशा में प्रयोग नहीं करना चाहिए, एक बार, मैं एक नाव पर फोटो सेशन कर रहा था और कपल के बैकग्राउंड में रंगीन धुएँ वाली फोटो करना चाह रहा था, चिंगारी से कपल में से एक का कपडा ख़राब हो गया था। धुएं के समाप्त होने पर यह एक निश्चित अवधि के लिए गर्म रहता है अतः सूखे पत्तों इत्यादि पर बम नहीं फेंकना चाहिए। इसे केवल तभी फेंकना चाहिए जब यह ठंडा हो।

हल्का ज्वलनशील होने के साथ यह आपके कपड़ो एवं कैमरे पर रंगीन धब्बे भी डाल सकता है। यद्यपि आप दाग को साफ कर सकते हैं, पर कुछ विशेष प्रकार के महंगे कपड़े होते हैं जिन्हें पानी से धोना मुश्किल होता है। अतः सावधानी रक्खें।

अनापत्ति की जानकारी कर लें - प्रयोग से पूर्व यह पता कर लें कि क्या उस जगह पर स्मोक बम का उपयोग करने की अनुमति है जहाँ आप तस्वीरें ले रहे हैं। सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान की अनुमति नहीं होती है और आपको यह जानकारी हो चुकी है कि यह (स्मोक बम) अत्यधिक रंगीन धुआँ फैलाता है, बहुत सारे स्थानों पर किसी भी प्रकार की आतिशबाजी पर प्रतिबंध होता हैं।

रंगीन धूम्र बम के साथ फोटोग्राफी हमेशा आउटडोर में ही आयोजित की जाती है यह काफी चुनौतीपूर्ण हो सकती है क्योंकि इसकी सफलता ज्यादातर मौसम की स्थिति पर निर्भर करती है। आपको धूम्र बम फोटोग्राफी के लिए हवा के मौसम से बचने के लिए सलाह दी जाती है। किसी भी बंद हाल अथवा कमरे में प्रयोग से बचें, क्योकि धुएं में सांस लेना इतना आसान नहीं होता है, और फोटो भी ख़राब होने की सम्भावना रहती है। धुएं का गुबार बहुत घना होता है जिससे आंखों में जलन और गले को परेशानी होती है। यदि एक फोटोशूट हाल या कमरे के अंदर होना है, तो कमरे को अच्छी तरह हवादार होना चाहिए।

फोटोशूट के पहले की तैयारी - रंगीन धुएं के बादल लगभग 60 सेकंड तक ही प्राप्त होंगे। जिसका अर्थ है कि आपको जल्दी से कार्य करना होगा। स्मोक बम जलाने के पूर्व ही पोज के लिए सभी तयारी कर लें। अगर स्मोक से कोई क्रिएटिव आकृति तैयार करना चाहते हैं तो आभासी प्रयोग पूर्व में ही करें। ध्यान रहे कि थोड़ा सा चूक जाने पर आपको अतिरिक्त शॉट्स के लिए अतिरिक्त बम की आवश्यकता हो सकती है, जो आपकी तैयारी और बजट दोनों बिगाड़ सकता है। मैं कलर स्मोक का प्रयोग ज्यादातर गंगा के पार रेतीले क्षेत्र में करता हूँ, अधिकतर समय वहाँ तेज हवा चल रही होती है। केवल एक फोटो में स्मोक से घेरे का निर्माण हो पाया, हवा के तेज बहाव में हवा के दिशा में स्मोक को उड़ा कर फोटोग्राफी हो पाती है। तेज हवा में कलर स्मोक सुलगाना भी थोड़ा दुरूह होता है। कभी-कभी 2 स्मोक जलाने के प्रयास में 1 थोड़ा पहले जल जाता है और दूसरा 15-20 सेकेण्ड बाद जलता है। इस अवस्था में दुबारा नया स्मोक बम जलना पड़ता है। कुछ व्यर्थ स्मोक जल जाने के बाद मैंने अलग-अलग स्मोक जलाने के तरीके को बदला। अब दोनों स्मोक बम की चोटियों को एक साथ करके माचिस की 5-6 तीलियों को एक साथ जला कर सुलगाने से नुकसान होना बंद हो गया है।

कलर स्मोक फोटोग्राफी किस समय करें - दिन के किसी भी समय में आप कलर स्मोक का प्रयोग कर सकते हैं पर बेहतर परिणाम के लिए गोल्डन आवर के दौरान का समय मुझे ज्यादा अच्छा लगता है। सूर्यास्त से पहले के आखिरी घंटे और सूर्योदय के पश्चात के प्रारम्भिक 1 घंटे के दौरान फ़ोटो लेना मुझे अच्छा लगता है, रात्रि के समय भी बैक फ़्लैश अथवा लाइट के साथ भी क्रिएटिव फोटो का प्रयोग किया जा सकता है। आप रात में कार की हेड लाइट का प्रयोग भी कर सकते हैं, कार के दोनों हेडलाइट जला कर उसके आगे रंगीन धुए के प्रयोग से भी आकर्षक परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

किस रंग के स्मोक का प्रयोग करना चाहिए - जब आप पहली बार कलर स्मोक फोटोग्राफी कर रहे होते हैं तो किस रंग के स्मोक का प्रयोग करना है, इसके निर्णय लेने में असमंजस हो सकता है। आप कपल के कपड़ों के रंग से मेल खाते रंगीन धुएं का उपयोग कर सकते हैं, अथवा विपरीत कलर का प्रयोग भी कर सकते हैं। अगर आप हरियाली में शूट कर रहे हैं तो हरे रंग का प्रयोग भी कर सकते हैं, यह पूरी तरह आपके और आपके क्लाईंट के टेस्ट के ऊपर निर्भर करता है। मैं अक्सर क्लाईंट के सामने उपलध रंग विकल्प प्रस्तुत कर देता हूँ।

शटर स्पीड - अगर आप स्मोक्ड ट्रेल्स टेक्सचर्ड चाहते हैं, तो हाई शटर स्पीड रखें। ध्यान रहे कि स्मोक बम फोटोग्राफी में न्यूनतम 1/500 , 1/1000 या 1/2000 और अधिकतम रखना बेहतर परिणाम प्राप्त करने में सहायक होता है, इसके अलावा, एपर्चर और आईएसओ का सही समायोजन करना न भूलें।

फोकस - कलर स्मोक शूट के समय फोकस हमेशा कपल के चेहरे पर रक्खें। ऑटो फोकस मोड़ में कैमरा कई बार धुंए के गुबार को भी फोकस करने लगता है। अगर आपका सब्जेक्ट शूट के दौरान गतिमान रहने वाला है तो फोकस की सेटिंग्स का ध्यान रक्खें।

STUDIO NEWS
लखनऊ, रविवार, 6 सितम्बर 2020 से 5 अक्टूबर 2020

मेरे लिए फोटोग्राफी देखने के बजाए महसूस करने की कला है। अगर आप खुद की तस्वीर को देख कर उस पल का एहसास नहीं कर पाएंगे तो किसी और को भी नहीं करा पाएंगे। - डॉन मैक्यूलिन

19 अगस्त विश्व फोटोग्राफी दिवस

सक्सेस मंत्र फाउंडेशन द्वारा माय पिक फोटोग्राफी कांटेस्ट

1st Prize

Mr. Sandipani Chattopadhyay, Kolkata

2nd Prize

Mr. Ankit Porwal ,Indore

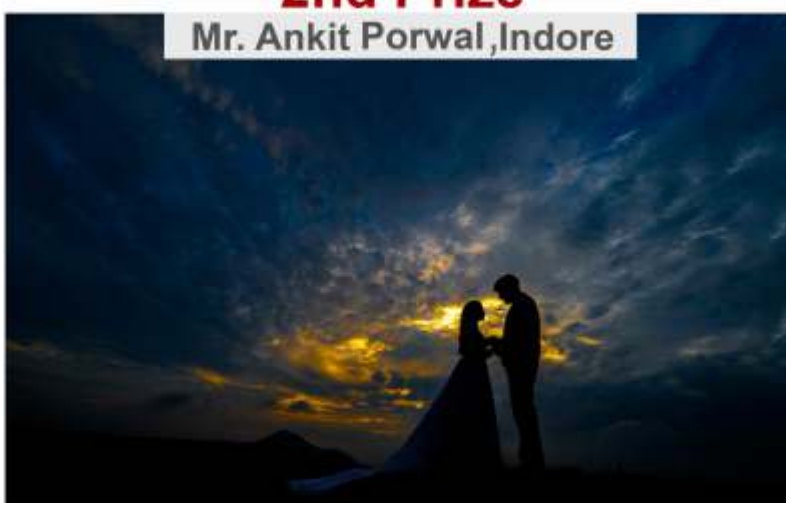

3rd Prize

Mr. Anitha Mysore,Bengaluru

19 अगस्त विश्व फोटोग्राफी दिवस के उपलक्ष में सक्सेस मंत्र फाउंडेशन द्वारा माय पिक फोटोग्राफी कांटेस्ट का आयोजन दिनांक 19-08-2020 को कटनी, मध्य प्रदेश स्थित द ग्रैंड सीता होटल में किया गया। इस प्रतियोगिता में भारत के प्रत्येक अलग-अलग क्षेत्रों से लगभग 500 से अधिक प्रतिभागियों ने आनलाइन माध्यम से हिस्सा लिया। जिनमें प्रथम पुरस्कार निकॉन कैमरा कोलकाता के संदीपनी चट्टोपाध्याय जी, द्वितीय पुरस्कार रू. 11,000 नगद राशि इंदौर के अंकित पोरवाल जी, तृतीय पुरस्कार मोजा मोबाइल गिंबल बेंगलुरू से अनीता मैसूर जी ने जीता। इसके अलावा 15 विभिन्न कैटेगरी में 15 पुरस्कार, 25 सांत्वना पुरस्कार, 25 पुरस्कार लकी ड्रॉ के माध्यम से दिए गए। इस अवसर पर सक्सेस मंत्र फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री प्रशांत पचौरी जी, सचिव श्री शरद विश्वकर्मा जी, उपाध्यक्ष श्री भावेश चौरसिया जी, कोषाध्यक्ष श्री शशांक जैन, कम्युनिकेशन हेड श्री संजय सिंह एवं श्रीमती सीमा, श्रीमती लक्ष्मी, श्रीमती पिंकी, श्रीमती दीपाली, वीरभान पंजवानी, राम निषाद, योगेश, आर्या, शौर्या, सुजल, नमिता एवं समिति के अन्य सदस्यों की उपस्थिति रही।

विश्व फोटोग्राफी दिवस (19 अगस्त) की गतिविधियाँ

फोटाग्राफर्स एसोसिएशन उत्तर प्रदेश, लखनऊ

हरदोई फोटाग्राफर्स एसोसिएशन, हरदोई

फोटोग्राफर सोसाइटी (ऑफ) प्रयागराज, इलाहाबाद

लखनऊ फोटाग्राफर्स एसोसिएशन, लखनऊ

कानपुर फोटाग्राफर्स एसोसिएशन, कानपुर

फर्रुखाबाद फोटाग्राफर्स एसोसिएशन, फर्रुखाबाद

बलिया फोटाग्राफर्स एसोसिएशन, बलिया

मेरठ कैमरा क्लब, मेरठ

STUDIO NEWS
लखनऊ, रविवार, 6 सितम्बर 2020 से 5 अक्टूबर 2020

एक तस्वीर को यादगार बनाने के लिए डेप्थ ऑफ फील्ड की नहीं डेप्थ ऑफ फीलिंग्स की जरूरत होती है। - पीटर एडम्स

बरेली फोटोग्राफर्स एसोसिएशन, बरेली

उ.प्र. फोटोग्राफर्स एसोसिएशन इकाई, शाहजहाँपुर

जालौन फोटोग्राफर्स एसोसिएशन, जालौन

अमेठी फोटोग्राफर्स एसोसिएशन, अमेठी

बुंदेलखण्ड फोटोग्राफर्स एसोसिएशन, झांसी

बिजनौर फोटोग्राफर्स एसोसिएशन, बिजनौर

औरैया फोटोग्राफर्स एसोसिएशन, औरैया

देहरादून फोटोग्राफर्स वेलफेयर सोसाइटी, देहरादून

चाइल्ड फोटोग्राफी और इंडोर लाइट्स

अभिनीत सेठ
चाइल्ड फोटोग्राफर

हेलो दोस्तों। उम्मीद है आप सब अच्छे होंगे और संयम और धैर्य से चल रहे वक्त का सामना कर रहे होंगे। जैसा कि दोस्तों आप सब ने पिछले अंक में पढ़ा कि कैसे इंडोर लोकेशन में शूट करते वक्त हमको विंडो लाइट का प्रॉपर यूज करना होता है, ताकि हमारा पोर्ट्रेट एकदम सूटेबल दिखे। पर ऐसा जरूरी नहीं है कि आपको हमेशा ही इतनी विंडो लाइट मिल जाएँ कि आप अपना शूट बिना हैसल के कम्पलीट कर सके। अक्सर लाइट इतनी नहीं होती कि आप अपना शूट ढंग से कर पाएं। ऐसी सिचुएशन में आपको एक एक्सटर्नल सोर्स ऑफ लाइट की जरूरत पड़ती हैं। इस एक्सटर्नल सोर्स ऑफ लाइट का बहोत ही इम्पोर्टेन्ट रोल हैं। जब आप अपने सब्जेक्ट को विंडो लाइट के सामने रखते है तो सब्जेक्ट ठीक ठाक ढंग से इल्लुमिनेट हो जाता है। पर ऐसा जरूरी नहीं हैं कि आपको ऐसी विंडो लाइट हमेशा मिले जिससे आपका फोटोशूट प्रॉपर्ली हो जाए। अक्सर ऐसा होता है कि आपको विंडो लाइट सिर्फ उतनी ही मिलती है जितनी आपको आपका सब्जेक्ट दिख सके ना कि इतनी की जितनी फोटोशूट के लिए जरूरी होता है। विंडोज से हमेशा वन साइडेड लाइट ही मिलती हैं जिसकी वजह से सब्जेक्ट एक तरफ से डार्क दिखता है। अगर फोटोग्राफी की लैंग्वेज में बोले तो शैडो क्रिएट होती है - वन साइडेड शैडो। हालाँकि काफी बार ऐसा देखा गया है कि वन साइडेड शैडो पोर्ट्रेट के लिए अच्छी मानी जाती है। बहुत से फोटोग्राफर्स अपनी फोटोज को क्रिएटिव एंगल देने के लिए ऐसी शैडोज जानबूझ के क्रिएट करते हैं। पर शैडो आपके पोर्ट्रेट्स को अक्सर अनप्रोफेशनल लुक भी दे सकती है। इसीलिए क्रिएटिव और परफेक्ट फोटो हासिल करने के लिए आपको कहीं न कहीं एक एक्सटर्नल लाइट सोर्स की जरूरत पड़ती ही हैं। एक्सटर्नल लाइट सोर्स के

फॉर्म में आपके पास कई ऑप्शन होते हैं। आप चाहे तो विंडो लाइट के साथ-साथ सपोर्टिंग लाइट के फॉर्म में इंडोर में यूज होने वाली एलईडी लाइट्स या फिर कभी-कभी ट्यूब लाइट का भी यूज कर सकते हैं। पर हमेशा ऐसे ऑप्शंस काम नहीं करते। इसलिए प्रोफेशनल पॉइंट ऑफ व्यू से आप एक्सटर्नल लाइट में यूज होने वाले लाइट सॉफ्टबॉक्सेस या अम्ब्रेलाज यूज कर सकते हैं। अब ये समझिये कि सॉफ्टबॉक्स और अम्ब्रेला में बेसिक डिफरेंस क्या होता है। जैसा की नाम से ही समझ में आ रहा की सॉफ्टबॉक्स, मतलब ऐसा बॉक्स जो लाइट को सॉफ्ट कर दें। इसीलिए सॉफ्टबॉक्स हमेशा डायरेक्ट सोर्स ऑफ लाइट को डिफ्यूज करने के लिए यूज होते है। यहाँ डिफ्यूज का मतलब हैं कि आप अपने सॉफ्टबॉक्स में जिस भी डायरेक्ट सोर्स ऑफ लाइट को यूज कर रहे हैं, उस लाइट को सॉफ्टबॉक्स एक डिफ्यूजर के थ्रू सॉफ्ट और स्मूथ कर देता है। सॉफ्टबॉक्स में जो भी सोर्स ऑफ लाइट यूज होता है वो हमेशा डायरेक्ट सब्जेक्ट पे गिरने के लिए होता है, इसीलिए शुरूआत से सॉफ्टबॉक्सेस हमेशा स्टूडियो लाइट के लिए यूज होते आएं हैं। सॉफ्टबॉक्स से निकली हुई लाइट हमेशा सब्जेक्ट की स्किन टोन, टेक्सचर वगैरा को स्मूथ कर देती हैं। चूंकि सॉफ्टबॉक्स ज्यादातर बड़े साइज के ही होते हैं इसलिए उसमें से निकलने वाली लाइट अपने आप ही सॉफ्ट और स्मूथ हो जाती हैं। सॉफ्टबॉक्स में एक पतला सा कपडा लगा होता है जिसको डिफ्यूजर कहते हैं। सॉफ्टबॉक्स के साथ कुछ रेस्ट्रिक्टशंन भी होते हैं। सबसे बड़ा रेस्ट्रिक्टशंन होता है उसका साइज। बड़े साइज का होने की वजह से उसको कहीं भी लेकर जाना बड़ा ही मुश्किल काम होता हैं। और दूसरी दिक्कत जो सॉफ्टबॉक्स के साथ आती हैं वो ये है कि उसमे यूज होने वाली लाइट्स को इलेक्ट्रिसिटी चाहिए होती हैं। जिसकी वजह से अगर आपको आऊटडोर शूट करना हो तो काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। अगर जंगल वगेहरा में शूट करना हो तो आपको अलग से बैटरी सेटअप इनस्टॉल करना पड़ेगा। इसीलिए सॉफ्टबॉक्सेस का ज्यादातर यूज इंडोर शूट में ही होता हैं। वही दूसरी जगह अगर हम अम्ब्रेला सेटअप की बात करे तो अम्ब्रेला लाइट्स काफी लाइट वेट और पोर्टेबल होती हैं। इसको आप फोल्ड करके आराम से कहीं भी ले जा सकते हैं। दूसरी सबसे बड़ी बात इसके साथ है कि इनमें बड़ी-बड़ी लाइट्स नहीं लगानी पड़ती - मेरा मतलब यहाँ पे स्टूडियो लाइट्स से है। इनमें स्टूडियो लाइट्स की जगह आप एक अच्छी क्वालिटी की पोर्टेबल फ्लैश लाइट यूज कर सकते हैं। अच्छी टीटीएल फ्लैश आपको

अम्ब्रेला के साथ बहुत अच्छे रिजल्ट्स दे सकती है। कुछ ऐसे समझिये कि अगर आप इंडोर शूट कर रहे हैं, और आपकी लोकेशन एक रूम की हैं जिसमे विंडो से विंडो लाइट आ रही हैं तो आप एक अच्छे अम्ब्रेला, टीटीएल फ्लैश लाइट के सहारे पूरा कमरा काफी ढंग से एक्सपोज कर सकते हैं। अब एक और टेक्निकल और इम्पोर्टेन्ट बात, कि अम्ब्रेला में लगी हुई टीटीएल लाइट को आप कण्ट्रोल और कमांड कैसे करेंगे। तो अम्ब्रेला में लगी हुई टीटीएल लाइट को कंट्रोल और कमांड देने के लिए आपको रिमोट सेंसर की जरूरत पड़ती हैं। ये रिमोट सेंसर्स आपके कैमरा के हॉट शू और अम्ब्रेला स्टैंड में एक रिमोट बेस एडाप्टर के थ्रू लग जाते हैं। अब रिमोट सेंसर्स किट में यूजअली 2 रिमोट होते हैं - एक ट्रांसमीटर एक रिसीवर। जो ट्रांसमीटर होता है वो आपके कैमरे के हॉट शू पे लगता है और जो रिसीवर होता है वो आपके अम्ब्रेला एडाप्टर के हॉट शू पे फिक्स होता है। तो शूट करते वक्त जब आप प्रॉपर फ्रेमिंग - कम्पोजीशन और बैलेंस्ड एक्सपोजर सेट करने के बाद अपने कैमरे का क्लिक बटन पुश करते हैं तो आपके कैमरे के हॉट शू पे लगा हुआ सेंसर या ट्रांसमीटर एक सिग्नल रिलीज करता है जो की अम्ब्रेला लाइट में लगे हुए फ्लैश लाइट पे फिक्स्ड दूसरे सेंसर को कंमांड देता है और इस तरह से आपकी अम्ब्रेला में लगी हुई फ्लैश फायर हो जाती हैं। तो विंडो लाइट और फ्लैश लाइट के प्रॉपर कॉम्बिनेशन से आप एक अच्छे रिजल्ट वाला शूट कर सकते हैं। इस अंक में इतना ही, मिलते है अगले महीने किसी दूसरे टॉपिक और ढेर सारी नॉलेज के साथ। गुड बाई, टेक केयर, बी सेफ।

RNI No. : UPHIN/2017/74695, **स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक** - सुरेंदर सिंह बिष्ट, शॉप नं. 3, शान्ति मार्केट, लक्ष्मणपुरी गेट, फैजाबाद रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ - 226016 द्वारा ज्ञान प्रिंटर्स, 207, 208 लेखराज मार्केट-2, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 से प्रकाशित।
सम्पादक - सुरेंदर सिंह बिष्ट, फोन - 0522-4108575, ई-मेलः infostudionewsup@gmail.com, वेबसाइट : www.studionews.co.in